रुद्राष्टाध्यायी – हिन्दी भावार्थ

श्रीगणेशाय नम:

रुद्राष्टाध्यायी और रुद्राभिषेक माहात्म्य

गृहस्थाश्रम में पडकर जिससे मन, विषयलोलुप होकर अधोगतिको प्राप्त न हो, और अपनी वृत्तियोंको स्वच्छ रखसके इसके निमित्त रुद्रका अनुष्ठान करना मुख्य और उत्कृष्ट साधन है यह रुद्रानुष्ठान ही प्रवृत्ति मार्गसे निवृत्ति मार्गको प्राप्त कराने में समर्थ है।

महात्माओं द्वारा कल्याण के निमित्त यह श्रुति दूधर्मेसे ***रुद्राष्टाध्यायी*** रूप नवनीत निकालकर साररूप लिया गया है।

वेदमंत्रोंका विनियोग, अर्थ, ऋषियोंका स्मरणादि जाननेका माहात्म्य ब्राह्मण और अनुक्रमणिकामें विशेषरूपसे वर्णन

किया है, अर्थ और विनियोगको जानकर जो कार्य किया जायगा वह कल्पवृक्षकी समान विशेष रूप से फलदायक होता है इससे अर्थका ज्ञान अवश्य होना चाहिये। जैसे-

"हे रुद्र! रुत् दुःखं द्रावयति रुद्रः। यद्वा रुगतौ ये गत्यर्थास्त ज्ञानार्थाः रवणं रुत् ज्ञानम् भावे कि तुगागमः। रुत् ज्ञानं राति ददाति रुद्रः ज्ञानप्रदः। यद्वा – पापिनो नरान् दुःखभोगेन रोदयति रुद्रः।"

इस प्रकार अर्थके ज्ञानसे विशेष प्रतिपत्ति होनेसे श्रुतिमें भी विशेषफल प्रतिपादन किया है-

उतत्वः पश्यन्नः ददर्शवाचमुतत्वः शृण्वन्न शृणोत्नम् उतोत्वस्मै तन्वं विसले जायेव पत्य उशती सुवासाः

इत्यादि मंत्रों में अर्थज्ञानकी प्रशंसा सुनी हैं, और

यद् गृहीतमविज्ञातं निगदेनेवशब्द्यते।

अनग्नाविवशुष्कंधोनत ज्ज्वलतिकर्हिचित्।।

इत्यादि वाक्यों द्वारा अर्थ न जाननेकी निन्दा सुनी है। दूसरा वचन भी निरुक्तमें लिखा है-

स्थाणुरयं भारहारः किलाभू-

दधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम् ।

योऽर्थज्ञ इतः सकलं भद्रमश्नुते

नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा।।

अर्थात् जो वेद पढकर उसका अर्थ नहीं जानता वह ढूँढकी समान भार ढोनेवाला है। और जो अर्थको जानता है वह सब कल्याणको प्राप्त होता है। और पानरहित हो बैकुण्ठको प्राप्त होता है, इन वचनों से अर्थका जानना सम्पूर्ण कल्याणका करनेवाला है। जो कहते हैं कि **“स्वाध्यायोऽध्येतव्यः"** इस वचनसे पाठ मात्रसे ही कर्मानुष्ठान में सफलता होजाती हैं यह सत्य है, परन्तु अर्थज्ञानसे विशेष वीर्यवान् होता है, इससे अर्थज्ञान अवश्य होना चाहिये।

उपनिषद् स्मृति पुराण आदि में रुद्रजापका विशेष

माहात्म्य वर्णन किया है मोक्षकी प्राप्ति, पापनाश आरोग्य आयुष्यकी प्राप्ति, रुद्रजापसे होती है। जाबाल उपनिषद् में लिखा है-

अथ ब्रह्मचारिण ऊचुः किंजप्येनैवामृत त्वमश्नुतः इति ब्रूहरति। स होवाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेण इति

अर्थात् ब्रह्मचारियोंने याज्ञवल्क्यऋषिसे प्रश्न किया कि क्या जपनेसे मोक्षकी प्राप्ति होती है। याज्ञवल्क्यने उत्तर दिया कि. शतरुद्रियके जपसे कैवल्य उपनिषद् में लिखा है -

यः शतरुद्रियमधीते सोग्निपूतो भवति स्वर्णस्तेयात्पूतो भवति सुरापानात्पूतो भवति ब्रह्महत्यातः पूतो भवति कृत्याकृत्यात्पूतो भवति भवति तस्मादविमुक्तमाश्रितो भवति अत्याश्रमी सर्वदा सकृद्वा जपेदनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनं 'तस्मादेवं विदित्यैनं कैवल्यं फलमश्नुते' इत्याह शातातपः

अर्थ जो शतरुद्रिय पाठ करताहै वह जैसे अग्निसे निकाले

पदार्थ सुवर्ण आदि पवित्र होजातेहैं, तद्वत् पवित्र होताहै, सोनेकी चोरीके पापसे छूटजाता है, सुग़शनके पापसे रहित होताहै, ब्रह्महत्यासे पवित्र होता है, कृत्याकृत्यसे पवित्र होता है आश्रमत्यागी भी एकवार पाठमात्रसे पवित्र होता है, इसके जपसे ज्ञान की प्राप्ति होती है संसारसागरसे पार होजाता है। इसकारण इसको जानकर कैवल्यकी प्राप्ति होती है इसप्रकार शातातप कहते हैं।

स्तेयं कृत्वा गुरुदारांश्च गत्वा

मद्यं पीत्वा ब्रह्महत्यां च धृत्वा।

भस्मच्छन्नो भस्मशय्याशयानो

रुद्राध्यायी मुच्यते सर्वपापैः।।

अर्थ सुवर्णकी चोरी, गुरुस्त्रीमें गमन, मद्यपान, ब्रह्महत्यादि पाप करके सर्वांगमें भस्म लेपन करके भस्ममें शयन करनेवाला रुद्राध्यायीके पाठसे सत्र पापसे छूट जाता है।

याज्ञवल्क्य कहते हैं-

सुरापः स्वर्णहारी च रुद्रजापी जले स्थितः।

सहस्रशीर्षाजापी च मुच्यते सर्वकिल्विषैः।

अर्थात् मद्य पीनेवाला सुवर्णकी चोरी करनेवाला जो जलमें स्थित

होकर रुद्राध्यायका जप करता है तथा सहस्रशीर्षा इस अध्यायको पढता है, वह सबपापों से छूट जाता है।

तथा च रुद्रेकादशिनीं जप्त्वा तह्नैव विशुध्यति

अर्थात् एकादश बार रुद्रजापसे उसीदिन शुद्ध होजाता है। महात्माशङ्खजी कहते हैं-

स्वर्णस्तेयी रुद्राध्यायी मुच्यते।

अर्थात् सुवर्णस्तेयां रुद्राध्यायके पाठसे मुक्त होता है।

तथा च वायुपुराणे-

यश्च रुद्राञ्जपेन्नित्यं ध्यायमानो महेश्वरम् ।।

यश्च सागरपर्यन्तां सशैलवनकाननाम् ॥ १ ॥

सर्वान्नात्मगुणोपेतां सुवृक्षजलशोभिताम् ॥

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

दद्यात्काञ्चनसंयुक्तां भूमिं चौषधिसंयुताम् ।।
तस्मादप्यधिकं तस्य सकृद्रुद्रजपाद्भवेत् ॥ २ ॥
मम भावं समुत्सृज्य यस्तु रुद्राञ्जपेत्सदा ।।
स तेनैव च देहेन रुद्रः संजायते ध्रुवम् ॥ ३ ॥

अर्थ-वायुपुराणमें लिखा है जो महेश्वरका ध्यान करताहुआ एकवार रुद्रीका जप करता है उसको, जो शैल बन काननके सहित सर्वश्रेष्ठगुणोंसे युक्त, अच्छे वृक्ष और जलोंसे शोभित, सुबर्ण और औषधि सहित, समुद्रपर्यंत पृथिवीको दान करता है उससे भी अधिक फल होताहै। अर्थात् रुद्रीजपका फल इससे विशेषहै और जो ममत्वको छोड़कर सदा रुद्रदेवका जप करता है वह उसीदेह से निश्चय रुद्र होजाता है।

चमकं नमकं चैव पौरुषसूक्तं तथैव च ।
नित्यं त्रयं प्रयुञ्जानो ब्रह्मलोके महीयते ॥ १ ॥
चमकं नमकं होतॄन्पुरुषसूक्तं जपेत्सदा ।

प्रविशेस महादेवं गृहं गृहपतिर्यथा ॥२ ॥

भन्मदिग्धशरीरस्तु भम्मशायी जितेन्द्रियः।

सततं रुद्रजाप्योऽसौ परां मुक्तिमवाप्स्यति ॥ ३ ॥

रोगवान्पापवांश्चैव रुद्रं जप्त्वा जितेन्द्रियः।

रोगात्सापाद्विनिर्मुक्तो ह्यतुलं सुखमश्नुते ॥ ४ ॥

अर्थ- चमकनामक अध्याय तथा पुरुषसूक्त तीनवार जपनेसे ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठा पाता है। जो चमक नमक तथा पुरुषनूकका सहा जप करते हैं, वह महादेवमें ऐसे प्रवेश करजाते हैं जैसे गृहपति अपने घरमें प्रवेश करजाता है || २ || शरीर में भस्म लगानेसे, भहममें शयनकरनेसे, जितेन्द्रिय होकर निरन्तर रुद्राध्यायका पाठकर से मनुष्य मुक्त होजाताहै ॥ ३ ॥ और जो रोगी तथा पापी भी जितेन्द्रिय होकर रुद्राध्यायका पाठ करे तो रोग और पापसे निवृत्त होकर महासुखको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

आहच शंख:-

रहसि कृतानां महापातकानामपि शतरुद्रियं

प्रायश्चित्तमिति।

शंख ऋषि कहते हैं कि गुप्तमहापातकों का भी प्रायश्चित्त शतरुद्रियका जप है।

शतरुद्रिय इसका नाम इसकारण है कि रुद्रदेवता १०० संख्या वाले हैं यह रुद्रोपनिषद् है इसमें शिवात्मकब्रह्मका निरूपण हैं।

ब्रह्मके तीन रूप हैं एक तो कार्यरूप सबका उपादानकारण सर्वात्मक, दूसरा सृष्टिस्थितिसंहार निमित्तक पुरुषनामबाला, तीसरा अविद्यामे परे निर्गुण निरञ्जन सत्य ज्ञान आनन्द के लक्षणवाला, यह रुद्रके मुख्यस्वरूप है।

इस रुद्राष्टाध्यायी में ब्रह्म के सगुण निर्गुण दोनोंप्रकार के रूपोंका वर्णन है, परमात्माकी उपासना, भक्तिमहिमा, शान्ति पुत्रपौत्रादिकी वृद्धि, नीरोगता यज्ञीय पदार्थ आदि कितनीही वस्तुओंका वर्णन है इसके पाठसे पाठकोंको यह भलीप्रकार से विदित हो जायगा

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

रुद्री या एकादशिनी(नमक-चमक)

रुद्राष्टाध्यायीके पाँचवें अध्यायमें ६६ मन्त्र हैं। रुद्र के बहुत से नाम चतुर्थी-विभक्ति- पुरस्सर हो, **'नमो नम:'** शब्दों से बारंबार दुहराये जाने के कारण इस अध्याय का नाम **नमकम्** पड़ा। इसी प्रकार अन्तिम आठवें अध्याय के मन्त्रों में भगवान् रुद्र से अपनी मनचाही वस्तुओं की प्रार्थना **'च मे च में'** अर्थात् 'यह भी मुझे, यह भी मुझे' शब्दों की पुनरावृत्ति के साथ की गयी है। इसलिये इसका नाम **'चमकम्'** पड़ा। इन दोनों नमक-चमक का समष्टि रूप ही **'नमक चमक'** है।

षडङ्गपाठमें नमकाध्याय (पञ्चम) तथा चमकाध्याय (अष्टम)-का संयोजन कर रुद्राध्यायको की गयी ग्यारह आवृत्तिको रुद्री या एकादशिनी कहते हैं। आठवें अध्यायके साथ पाँचवें अध्यायकी जो आवृत्ति होती है, उसके लिये शास्त्रोंका निश्चित विधान है, तदनुसार आठवें

अध्यायके क्रमशः चार-चार तथा फिर चार मन्त्रों, तीन-तीन तथा पुनः तीन मन्त्रों; तदनन्तर दो मन्त्र, फिर एक-एक मन्त्र और पुनः दो मन्त्रोंके अनन्तर पाँचवें अध्याय (नमक) -की एक-एक आवृत्ति होती है। अन्तमें शेष दो मन्त्रोंका पाठ होता है। इस प्रकार आठवें अध्यायके कुल उन्तीस मन्त्रोंको रुद्रोंकी संख्याग्यारह होनेके कारण ग्यारह अनुवाकोंमें विभक्त किया गया है-ऐसा रुद्रकल्पद्रुममें बताया गया है। इसे ही नमक चमक विधि कहते हैं। इसके बाद नवें और दसवें अध्यायका पाठ होता है। इस प्रकार की गयी एक आवृत्तिको रुद्री या एकादशिनी कहते हैं। इस क्रम में **रुद्र अध्याय- नमक (५) के ६६ मन्त्रों का आठवें अध्याय चमक के २८ मंत्रों में सम्पुट बीच बीच मे सम्पुट को नमक चमक कहते हैं।**

नमक-चमक में आठवें अध्याय में सम्पुट मंत्रों का संख्याक्रम

वेद (४) वेदा(४) ब्धि(४) रामाश्च(३) राम(३)राम(३) द्वि(२)'कै(१)'क(१)'कम् ।

द्वौ(२) द्वौ(२) पृथग्भिर्मन्त्रैस्तु नमकाश्चमकाः स्मृताः॥(कुल २८मन्त्र)

नमक-चमक में आठवें अध्याय में सम्पुट मंत्रों का आदिपद

वाजश्व१सत्य२ मूक् (३)चाश्मा(४) चाग्नि(५)रंशुष्(६) तथाग्निकः(७) ।

एका(८) चैव चतस्रश्च(९)त्र्य(१०) विर्वाजा(११) इति क्रमः॥

लघ्वेकादशभिः प्रोक्तो महारुद्रश्चतुर्थकः।

पञ्चमः स्यान्महारुद्रैरेकादशभिरन्तिमः ।।

अतिरुद्रः समाख्यातः सर्वेभ्यो ह्युत्तमोत्तमः ॥ (रुद्रकल्पद्रुम)

रुद्राष्टाध्यायी – प्रथम अध्याय भावार्थ

श्रीगणेश जी के लिए नमस्कार है. समस्त गणों का पालन करने के कारण गणपतिरूप में प्रतिष्ठित आप को हम आवाहित करते हैं, प्रियजनों का कल्याण करने के कारण प्रियपतिरुप में प्रतिष्ठित आपको हम आवाहित करते हैं और पद्म आदि निधियों का स्वामी होने के कारण निधिपतिरूप में प्रतिष्ठित आपको हम आवाहित करते हैं. हे हमारे परम धनरूप ईश्वर ! आप मेरी रक्षा करें. मैं गर्भ से उत्पन्न हुआ जीव हूँ और आप गर्भादिरहित स्वाधीनता से प्रकट हुए परमेश्वर हैं. आपने ही हमें माता के गर्भ से उत्पन्न किया है.

हे परमेश्वर ! गान करने वाले का रक्षक गायत्री छन्द, तीनों तापों का रोधक त्रिष्टुप छन्द, जगत् में विस्तीर्ण जगती छन्द, संसार का कष्ट निवारक अनुष्टुप छन्द, पंक्ति छन्द सहित बृहती छन्द, प्रभातप्रियकारी ऊष्णिक् छन्द के साथ

ककुप् छन्द – ये सभी छन्द सुन्दर उक्तियों के द्वारा आपको शान्त करें.

हे ईश्वर ! दो पाद वाले, चार पाद वाले, तीन पाद वाले, छः पाद वाले, छन्दों के लक्षणों से रहित अथवा छन्दों के लक्षणों से युक्त वे सभी छन्द सुन्दर उक्तियों के द्वारा आपको शान्त करें. प्रजापति संबंधी मरीचि आदि सात बुद्धिमान ऋषियों ने स्तोम आदि साम मन्त्रों, गायत्री आदि छन्दों, उत्तम कर्मों तथा श्रुति प्रमाणों के साथ अंगिरा आदि अपने पूर्वजों के द्वारा अनुष्ठित मार्ग का अनुसरण करके सृष्टि यज्ञ को उसी प्रकार क्रम से संपन्न किया था जैसे रथी लगाम की सहायता से अश्व को अपने अभीष्ट स्थान की ओर ले जाता है.

जो मन जगते हुए मनुष्य से बहुत दूर तक चला जाता है, वही द्युतिमान मन सुषुप्ति अवस्था में सोते हुए मनुष्य के समीप आकर लीन हो जाता है तथा जो दूर तक जाने

वाला और जो प्रकाशमान श्रोत आदि इन्द्रियों को ज्योति देने वाला है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो. कर्मानुष्ठान में तत्पर बुद्धि संपन्न मेधावी पुरुष यज्ञ में जिस मन से शुभ कर्मों को करते हैं, प्रजाओं के शरीर में और यज्ञीय पदार्थों के ज्ञान में जो मन अद्भुत पूज्य भाव से स्थित है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो.

जो मन प्रकर्ष ज्ञानस्वरुप, चित्तस्वरुप और धैर्यरूप है, जो अविनाशी मन प्राणियों के भीतर ज्योति रूप से विद्यमान है और जिसकी सहायता के बिना कोई कर्म नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो. जिस शाश्वत मन के द्वारा भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल की सारी वस्तुएँ सब ओर से ज्ञात होती हैं और जिस मन के द्वारा सात होता वाला यज्ञ विस्तारित किया जाता है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो.

जिस मन में ऋग्वेद की ऋचाएँ और जिसमें सामवेद तथा यजुर्वेद के मन्त्र उसी प्रकार प्रतिष्ठित हैं, जैसे रथचक्र की नाभि में अरे (तीलियाँ) जुड़े रहते हैं, जिस मन में प्रजाओं का सारा ज्ञान ओतप्रोत रहता है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो. जो मन मनुष्यों को अपनी इच्छा के अनुसार उसी प्रकार घुमाता रहता है, जैसे कोई अच्छा सारथी लगाम के सहारे वेगवान घोड़ों को अपनी इच्छा के अनुसार नियन्त्रित करता है, बाल्य, यौवन, वार्धक्य आदि से रहित तथा अतिवेगवान जो मन हृदय में स्थित है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो.

।। इस प्रकार रुद्र पाठ – रुद्राष्टाध्यायी – का पहला अध्याय भावार्थ पूर्ण हुआ ।।

सभी लोकों में व्याप्त महानारायण सर्वात्मक होने से अनन्त सिरवाले, अनन्त नेत्र वाले और अनन्त चरण वाले हैं. वे पाँच तत्वों से बने इस गोलकरूप समस्त व्यष्टि और समष्टि ब्रह्माण्ड को सब ओर से व्याप्त कर नाभि से दस अंगुल परिमित देश का अतिक्रमण कर हृदय में अन्तर्यामी रूप में स्थित हैं. जो यह वर्तमान जगत है, जो अतीत जगत है और जो भविष्य में होने वाला जगत है, जो जगत के बीज अथवा अन्न के परिणामभूत वीर्य से नर, पशु, वृक्ष आदि के रूप में प्रकट होता है, वह सब कुछ अमृतत्व (मोक्ष) के स्वामी महानारायण पुरुष का ही विस्तार है.

इस महानारायण पुरुष की इतनी सब विभूतियाँ हैं अर्थात भूत, भविष्यत, वर्तमान में विद्यमान सब कुछ उसी की महिमा का एक अंश है. वह विराट पुरुष तो इस संसार से अतिशय अधिक है. इसीलिए यह सारा विराट जगत इसका चतुर्थांश है. इस परमात्मा का अवशिष्ट तीन पाद अपने अमृतमय (विनाशरहित) प्रकाशमान स्वरूप में

स्थित है. यह महानारायण पुरुष अपने तीन पादों के साथ ब्रह्माण्ड से ऊपर उस दिव्य लोक में अपने सर्वोत्कृष्ट स्वरूप में निवास करता है और अपने एक चरण (चतुर्थांश) से इस संसार को व्याप्त करता है. अपने इसी चरण को माया में प्रविष्ट कराकर यह महानायिण देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि के नाना रूप धारण कर समस्त चराचर जगत में व्याप्त है.

उस महानारायण पुरुष से सृष्टि के प्रारंभ में विराट स्वरूप ब्रह्माण्ड देह तथा उस देह का अभिमानी पुरुष (हिरण्यगर्भ) प्रकट हुआ. उस विराट पुरुष ने उत्पन्न होने के साथ ही अपनी श्रेष्ठता स्थापित की. बाद में उसने भूमि का, तदनन्तर देव, मनुष्य आदि के पुरों (शरीरों) का निर्माण किया . उस सर्वात्मा महानारायण ने सर्वात्मा पुरुष का जिसमें यजन किया जाता है, ऐसे यज्ञ से पृषदाज्य (दही मिला घी) को सम्पादित किया. उस महानारायण ने उन वायु देवता वाले पशुओं तथा जो हरिण आदि वनवासी तथा अश्व आदि ग्रामवासी पशु थे उनको भी उत्पन्न किया.

उस सर्वहुत यज्ञपुरुष से ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्न हुए, उसी से सर्वविध छन्द उत्पन्न हुए और यजुर्वेद भी उसी यज्ञपुरुष से उत्पन्न हुआ. उसी यज्ञपुरुष से अश्व उत्पन्न हुए और वे सब प्राणी उत्पन्न हुए जिनके ऊपर-नीचे दोनों तरफ दाँत हैं. उसी यज्ञपुरुष से गौएँ उत्पन्न हुईं और उसी से भेड़-बकरियाँ पैदा हुईं. सृष्टि साधन योग्य या देवताओं और सनक आदि ऋषियों ने मानस याग की संपन्नता के लिए सृष्टि के पूर्व उत्पन्न उस यज्ञ साधनभूत विराट पुरुष का प्रोक्षण किया और उसी विराट पुरुष से ही इस यज्ञ को सम्पादित किया.

जब यज्ञसाधनभूत इस विराट पुरुष की महानारायण से प्रेरित महत्, अहंकार आदि की प्रक्रिया से उत्पत्ति हुई, तब उसके कितने प्रकारों की परिकल्पना की हई? उस विराट के मुँह, भुजा, जंघा और चरणों का क्या स्वरूप कहा गया है? ब्राह्मण उस यज्ञोत्पन्न विराट पुरुष का मुख स्थानीय होने के कारण उसके मुख से उत्पन्न हुआ, क्षत्रिय उसकी

भुजाओं से उत्पन्न हुआ, वैश्य उसकी जाँघों से उत्पन्न हुआ तथा शूद्र उसके चरणों से उत्पन्न हुआ. विराट पुरुष के मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ, नेत्र से सूर्य उत्पन्न हुआ, कान से वायु और प्राण उत्पन्न हुए तथा मुख से अग्नि उत्पन्न हुई.

उस विराट पुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष उत्पन्न हुआ और सिर से स्वर्ग प्रकट हुआ. इसी तरह से चरणों से भूमि और कानों से दिशाओं की उत्पत्ति हुई. इसी प्रकार देवताओं ने उस विराट पुरुष के विभिन्न अवयवों से अन्य लोकों की कल्पना की. जब विद्वानों ने इस विराट पुरुष के देह के अवयवों को ही हवि बनाकर इस ज्ञानयज्ञ की रचना की, तब वसन्त-ऋतु घृत, ग्रीष्म-ऋतु समिधा और शरद-ऋतु हवि बनी थी. जब इस मानस यागका अनुष्ठान करते हुए देवताओं ने इस विराट पुरुष को ही पशु के रूप में भावित किया, उस समय गायत्री आदि सात छन्दों ने सात परिधियों का स्वरूप स्वीकार किया, बारह मास, पाँच ऋतु, तीन लोक और सूर्यदेव को मिलाकर इक्कीस अथवा गायत्री आदि सात, अतिजगती आदि सात और कृति

आदि सात छन्दों को मिलाकर इक्कीस समिधाएँ बनीं.

सिद्ध संकल्प वाले देवताओं ने विराट पुरुष के अवयवों की हवि के रूप में कल्पना कर इस मानस-यज्ञ में यज्ञपुरुष महानारायण की आराधना की. बाद में ये ही महानारायण की उपासना के मुख्य उपादान बने. जिस स्वर्ग में पुरातन साध्य देवता रहते हैं, उस दु:ख से रहित लोक को ही महानारायण यज्ञपुरुष की उपासना करने वाले भक्तगण प्राप्त करते हैं.

उस महानारायण की उपासना के और भी प्रकार हैं – पृथिवी और जल के रस से अर्थात पाँच महाभूतों के रस से पुष्ट, सारे विश्व का निर्माण करने वाले, उस विराट स्वरूप से भी पहले जिसकी स्थिति थी, उस रस के रूप को धारण करने वाला वह महानारायण पुरुष पहले आदित्य के रूप में उदित होता है. प्रथम मनुष्य रूप उस पुरुष – मेधयाजी का यह आदित्य रूप में अवतरित ब्रह्म

ही मुख्य आराध्य देवता बनता है.

आदित्यस्वरूप, अविद्या के लवलेश से भी रहित तथा ज्ञानस्वरूप परम पुरुष उस महानारायण को मैं जानता हूँ. कोई भी प्राणी उस आदित्यरूप महानारायण पुरुष को जान लेने के उपरान्त ही मृत्यु का अतिक्रमण कर अमृतत्व को प्राप्त करता है. परम आश्रय के निमित्त अर्थात अमृतत्व की प्राप्ति के लिए इससे भिन्न कोई दूसरा उपाय नहीं है. सर्वात्मा प्रजापति अन्तर्यामी रूप से गर्भ के मध्य में प्रकट होता है. जन्म न लेता हुआ भी वह देवता, तिर्यक, मनुष्य आदि योनियों में नाना रूपों में प्रकट होता है. ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मा के उत्पत्ति स्थान उस महानारायण पुरुष को सब ओर से देखते हैं, जिसमें सभी लोक स्थित हैं.

जो आदित्यस्वरूप प्रजापति सभी देवताओं को शक्ति प्रदान करने के लिए सदा प्रकाशित रहता है, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं का बहुत पूर्वकाल से हित

करता आया है, जो इन सबका पूज्य है, जो इन सब देवताओं से पहले प्रादुर्भूत हुआ है, उस ब्रह्मज्योतिस्वरूप परम पुरुष को हम प्रणाम करते हैं. इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवताओं ने शोभन ब्रह्मज्योतिरूप आदित्य देव को प्रकट करते हुए सर्वप्रथम यह कहा कि हे आदित्य ! जो ब्राह्मण आपके इस अजर-अमर स्वरूप को जानता है, समस्त देवगण उस उपासक के वश में रहते हैं.

हे महानारायण आदित्य ! श्री और लक्ष्मी आपकी पत्नियाँ हैं, ब्रह्मा के दिन-रात पार्श्वस्वरुप हैं, आकाश में स्थित नक्षत्र आपके स्वरूप हैं. द्यावापृथिवी आपके विकसित मुख हैं. प्रयत्नपूर्वक आप सदा मेरे कल्याण की इच्छा करें. मुझे आप अपना कल्याणमय लोक प्राप्त करावें और सारे योगैश्वर्य मुझे प्रदान करें.

।। इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी) का दूसरा अध्याय भावार्थ पूर्ण हुआ ।।

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

रुद्राष्टाध्यायी – तीसरा अध्याय भावार्थ

शीघ्रगामी वज्र के समान तीक्ष्ण, वर्षा के स्वभाव की उपमा वाले, भयकारी, शत्रुओं के अतिशय घातक, मनुष्यों के क्षोभ के हेतु, बार-बार गर्जन करने वाले, देवता होने से पलक ना झपकाने वाले, अत्यन्त सावधान तथा अद्वितीय वीर इन्द्र एक साथ ही शत्रुओं की सैकड़ों सेनाओं को जीत लेते हैं. हे युद्ध करने वाले मनुष्यों ! प्रगल्भ तथा भय रहित शब्द करने वाले, अनेक युद्धों को जीतने वाले, युद्धरत, एकचित्त होकर हाथ में बाण धारण करने वाले, जयशील तथा स्वयं अजेय और कामनाओं की वर्षा करने वाले इन्द्र के प्रभाव से उस शत्रु सेना को जीतो और उसे अपने वश में करके विनष्ट कर दो.

वे जितेन्द्रिय अथवा शत्रुओं को अधीन करने वाले, हाथ में बाण लिए हुए धनुर्धारियों को युद्ध के लिए ललकारने वाले

इन्द्र शत्रु समूहों को एक साथ युद्ध में जीत सकते हैं. यजमानों के यज्ञ में सोमपान करने वाले, बाहुबली तथा उत्कृष्ट धनुष वाले वे इन्द्र अपने धनुष से छोड़े हुए बाणों से शत्रुओं का नाश कर देते हैं. वे इन्द्र हमारी रक्षा करें. हे बृहस्पते ! आप राक्षसों का नाश करने वाले होवें, रथ के द्वारा सब ओत विचरण करें, शत्रुओं को पीड़ित करते हुए और उनकी सेनाओं को अतिशय हानि पहुँचाते हुए युद्ध में हिंसाकारियों को जीतकर हमारे रथों की रक्षा करें.

हे इन्द्र ! आप दूसरों का बल जानने वाले, अत्यन्त पुरातन, अतिशय शूर, महाबलिष्ठ, अन्नवान, युद्ध में क्रूर, चारों तरफ से वीर योद्धाओं से युक्त, सभी ओर से परिचारकों से आवृत, बल से ही उत्पन्न, स्तुति को जानने वाले तथा शत्रुओं का तिरस्कार करने वाले हैं, आप अपने जयशील रथ पर आरोहण करें. हे समान जन्म वाले देवताओं ! असुरकुल के नाशक, वेदवाणी के ज्ञाता, हाथ में वज्र धारण करने वाले, संग्राम को जीतने वाले, बल से शत्रुओं का संहार करने वाले इस इन्द्र को पराक्रम दिखाने के लिए

उत्साह दिलाइये और इसको उत्साहित करके आप लोग स्वयं भी उत्साह से भर जाइये.

शत्रुओं के प्रति दयाहीन, पराक्रम संपन्न, अनेक प्रकार से क्रोधयुक्त अथवा सैकड़ों यज्ञ करने वाले, दूसरों से विनष्ट न होने योग्य, शत्रु सेना का संहार करने वाले तथा किसी के द्वारा प्रहरित न हो सकने वाले इन्द्र संग्रामों में असुर कुलों का एक साथ नाश करते हुए हमारी सेना की रक्षा करें. बृहस्पति तथा इन्द्र सभी प्रकार की शत्रु-सेनाओं का मर्दन करने वाली विजयशील देवसेनाओं के नायक हैं. यज्ञपुरुष विष्णु, सोम और दक्षिणा इनके आगे-आगे चलें. सभी मरुद्गण भी सेना के आगे-आगे चलें.

महानुभाव, सारे लोकों का नाश करने की सामर्थ्य वाले तथा विजय पाने वाले देवताओं, बारह आदित्यों, मरुद्गणों, कामना की वर्षा करने वाले इन्द्र और राजा वरुण की सभा से जय-जयकार का शब्द उठ रहा है. हे इन्द्र ! आप

अपने सहस्त्रों को भली प्रकार सुसज्जित कीजिए, मेरे वीर सैनिकों के मन को हर्षित कीजिए. हे वृत्रनाशक इन्द्र ! अपने घोड़ों की गति को तेज कीजिए, विजयशील रथों से जयघोष का उच्चारण हो.

शत्रु की पताकाओं के मिलने पर इन्द्र हमारी रक्षा करें, हमारे बाण शत्रुओं को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करें और हमारे वीर सैनिक शत्रुओं के सैनिकों से श्रेष्ठता प्राप्त करें. हे देवगण ! आप लोग संग्रामों में हमारी रक्षा कीजिए. हे शत्रुओं के प्राणों को कष्ट देने वाली व्याधि ! इन वैरियों के चित्त को मोहित करती हुई इनके सिर आदि अंगों को ग्रहण करो, तत्पश्चात दूर चली जाओ और पुन: उनके पास जाकर उनके हृदयों को शोक से दग्ध कर दो. हमारे शत्रु घने अन्धकार से आच्छन्न हो जाएँ. वेद-मन्त्रों से तीक्ष्ण किये हुए हे बाणरूप ब्रह्मास्त्र ! मेरे द्वारा प्रक्षित किये गये तुम शत्रु सेना पर गिरो, शत्रु के पास पहुँचो और उनके शरीरों में प्रवेश करो. इनमें से किसी को भी जीवित न छोड़ो.

हे हमारे वीर पुरुषों ! शत्रु की सेना पर शीघ्र आक्रमण करो और उन पर विजय पाओ. इन्द्र तुम लोगों का कल्याण करे, तुम्हारी भुजाएँ शस्त्र उठाने में समर्थ न हों, जिससे किसी भी प्रकार तुम लोग शत्रुओं से पराजय का तिरस्कार प्राप्त न करो. हे मरुद्गण ! जो यह शत्रुओं की सेना अपने बल पर हमसे स्पर्धा करती हुई हमारे सामने आ रही है, उसको अकर्मण्यता के अन्धकार में डुबो दो, जिससे कि उस शत्रु सेना के सैनिक एक-दूसरे को न पहचान पाएँ और परस्पर शस्त्र चलाकर नष्ट हो जाएँ.

जिस युद्ध में शत्रुओं के चलाए हुए बाण फैली हुई शिखा वाले बालकों की तरह इधर-उधर गिरते हैं, उस युद्ध में इन्द्र, बृहस्पति और देवमाता अदिति हमें विजय दिलाएँ. ये सब देवता सर्वदा हमारा कल्याण करें. हे यजमान ! मैं तुम्हारे मर्म स्थानों को कवच से ढकता हूँ, ब्राह्मणों के राजा सोम तुमको मृत्यु के मुख से बचाने वाले कवच से आच्छादित

करें, वरुण तुम्हारे कवच को उत्कृष्ट से भी उत्कृष्ट बनाएँ और अन्य सभी देवता विजय की ओर अग्रसर हुए तुम्हारा उत्साहवर्धन करें.

।। इस प्रकार रुद्रपाठ – रुद्राष्टाध्यायी – का तीसरा अध्याय पूर्ण हुआ ।।

रुद्राष्टाध्यायी – चौथा अध्याय भावार्थ

हे सूर्यदेव ! यजमान में अखण्डित आयु स्थापित करते हुए आप इस अत्यन्त स्वादु सोमरुप हवि का पान कीजिए. जो सूर्यदेव वायु से प्रेरित आत्मा द्वारा प्रजा का पालन और पोषण करते हैं, वे अनेक रूपों में आलोकित होते हैं. सूर्य रश्मियाँ सम्पूर्ण जगत को आलोक प्रदान करने के लिए जातवेदस् (अग्नितेजोमय) सूर्यदेव को ऊपर की ओर ले जाती रहती हैं. सबको शुद्ध करने वाले हे वरुणदेव ! आप जिस अनुग्रह दृष्टि से उस सुपर्ण स्वरूप को देखते हैं,

उसी चक्षु से आप हम ऋत्विजों को भी देखिए.

हे दिव्य अश्विनी कुमारो ! आप दोनों सूर्य के समान कान्तिमान रथ से हमारे यहाँ आइए और पुरोडाश, दधि आदि से यज्ञ को सींचकर उसे बहुत हवि वाला बनाइए. हे इन्द्र ! आप जिन यज्ञ क्रियाओं में पुन:-पुन: सोमरस का पान कर वृद्धि को प्राप्त होते हैं उन उत्कृष्ट विस्तारवान सर्वश्रेष्ठ यज्ञों में कुश आसन के सेवी, स्वर्गवेत्ता, शत्रुओं को कम्पित करने वाले तथा जेतव्य वस्तुओं को शीघ्र जीतने वाले आप बलपूर्वक यजमान को यज्ञफल प्रदान करते हैं. जैसे पुरातन भृगु आदि ऋषियों, पूर्व पितर आदि, विश्व के सभी प्राणियों तथा वर्तमान यजमानों ने आपकी स्तुति की है, उसी प्रकार हम आपकी स्तुति करते हैं.

विद्युत के लक्षणों वाली ज्योति से परिवृत यह कान्तिमान चन्द्र ग्रीष्मान्त के समय जल निर्माण के निमित्त सूर्य अथवा द्युलोक के गर्भ में स्थित रहने वाले जल को प्रेरित

करता है. बुद्धिमान विप्रगण सूर्य से जल की संगति के समय मधुर वाणियों से इस सोम की उसी प्रकार स्तुति करते हैं, जैसे लोग मधुर वचनों से अपने शिशु को प्रसन्न करते हैं. यह कैसा आश्चर्य है कि देवताओं के जीवनाधार, तेजसमूह तथा मित्र, वरुण और अग्नि के नेत्र स्वरूप सूर्य उदय को प्राप्त हुए हैं ! स्थावर-जंगममय जगत के आत्मास्वरूप इन सूर्यदेव ने पृथिवी, द्युलोक और अन्तरिक्ष को अपने तेज से पूर्णतः व्याप्त कर रखा है.

सब जीवों के हितकारी, अन्तर्यामी सूर्यदेव हमारी सुन्दर आहुतियों के कारण प्रशंसा योग्य यज्ञशाला में प्रकट हों. हे जरा रहित देवताओं ! आगमन-काल पर जिस प्रकार आप सब तृप्त होते हैं, उसी प्रकार इस सारे जगत को भी प्रज्ञा से तृप्त करें. हे अन्धकार के नाशक ऐश्वर्ययुक्त सूर्यदेव ! आज जहाँ कहीं भी आप उदित होते हैं, वह सब स्थान आपके ही वश में हो जाता है. हे सूर्यदेव ! आप संसार सागर में नौका के समान हैं, सबके दर्शनयोग्य हैं तथा सबको तेज प्रदान करने वाले हैं. प्रकाशित होने वाले सारे

संसार को आप ही प्रकाशित करते हैं अर्थात अग्नि, विद्युत, नक्षत्र, चन्द्रमा, ग्रह, तारों आदि में आपकी ही ज्योति प्रकाशित हो रही है.

सूर्य का यह जो देवत्व है और यह जो ऐश्वर्य है वह विराट स्वरूप देह के मध्य में सब ओर से विस्तारित ग्रहमण्डल को अपनी आकर्षण शक्ति से नियमित रखता है. जब ये अपनी हरित वर्ण की किरणों को आकाशमण्डल में अपनी आत्मा से युक्त करते हैं, तदनन्तर ही रात्रि अपने अन्धकाररूपी वस्त्र से सबको आच्छादित कर देती है. सूर्य स्वर्गलोक के उत्संग में मित्रदेव और वरुणदेव का रूप धारण करते हैं तथा उससे मनुष्यों को भली-भाँति देखते हैं अर्थात मित्रदेव के रूप में पुण्यात्माओं को देखकर उन पर अनुग्रह करते हैं और वरुणरूप में दुष्टजनों को देखकर उनका निग्रह करते हैं. इन सूर्य का अन्य स्वरुप अनन्त अर्थात देश-काल के परिच्छेद से रहित, मायोपाधि का नाशक ब्रह्म ही है.

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

हे जगत के प्रेरक सत्यस्वरूप सूर्यदेव ! आप ही सर्वश्रेष्ठ हैं. हे आदित्य ! आप ही महान हैं, स्तोतागण आपकी महान और अविनश्वर महिमा का गान करते हैं. हे दीप्यमान सत्यस्वरूप ! आप महान हैं. हे सत्यस्वरूप सूर्य ! आप धन (अथवा यश) – से महान हैं. हे सत्यस्वरुप देव ! आप महान हैं. आप अपनी महिमा के कारण देवताओं के मध्य असुरविनाशक (अथवा समस्त प्राणियों का कल्याण करने वाले) हैं. आप सभी कार्यों में अर्घ्य दानादि के रूप में प्रथम पूज्य हैं. आपकी ज्योति सर्वव्यापी तथा अनुल्लंघनीय है.

सूर्य की उपासना करने वाले इन्द्र आदि की उपासना से प्राप्त होने वाले धन-धान्य, ऐश्वर्य आदि भोगों को स्वत: प्राप्त कर लेते हैं, अत: हमको चाहिए कि प्रकाश की किरणों के साथ जब सूर्य भगवान उदित होते हैं, तब हम उनके निमित्त यज्ञ में देवभाग अर्पित करें. हे सूर्यरश्मिरूप देवताओं ! अब आज सूर्य का उदय होने पर आप लोग हमें पाप और अपयश से मुक्त करें.

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

मित्र, वरुण, अदिति, समुद्र, पृथ्वी और स्वर्ग – ये सब हमारे वचन को अंगीकार करें. सबको प्रेरणा प्रदान करने वाले सूर्यदेव सुवर्णमय रथ में आरुढ़ होकर कृष्णवर्ण रात्रि लक्षण वाले अन्तरिक्ष मार्ग में पुनरावर्तन-क्रम से भ्रमण करते हुए देवता-मनुष्यादि को अपने-अपने व्यापारों में व्यवस्थित करते हुए तथा सम्पूर्ण भुवनों को देखते हुए विचरण करते हैं.

।। इस प्रकार रुद्रपाठ – रुद्राष्टाध्यायी – का चौथा अध्यायभावार्थ पूर्ण हुआ ।।

रुद्राष्टाध्यायी – पाँचवाँ अध्याय भावार्थ

दु:ख दूर करने वाले (अथवा ज्ञान प्रदान करने वाले) हे रुद्र ! आपके क्रोध के लिए नमस्कार है, आपके बाणों के

लिए नमस्कार है और आपकी दोनों भुजाओं के लिए नमस्कार है. कैलास पर रहकर संसार का कल्याण करने वाले (अथवा वाणी में स्थित होकर लोगों को सुख देने वाले या मेघ में स्थित होकर वृष्टि के द्वारा लोगों को सुख देने वाले) हे रुद्र ! आपका जो मंगलदायक, सौम्य, केवल पुण्यप्रकाशक शरीर है, उस अनन्त सुखकारक शरीर से हमारी रक्षा कीजिए.

कैलास पर रहकर संसार का कल्याण करने वाले तथा मेघों में स्थित होकर वृष्टि के द्वारा जगत की रक्षा करने वाले हे सर्वज्ञ रुद्र ! शत्रुओं का नाश करने के लिए जिस बाण को आप अपने हाथ में धारण करते हैं वह कल्याणकारक हो और आप मेरे पुत्र-पौत्र तथा गो, अश्व आदि का नाश मत कीजिए. हे कैलास पर शयन करने वाले ! आपको प्राप्त करने के लिए हम मंगलमय वचन से आपकी स्तुति करते हैं. हमारे समस्त पुत्र-पौत्र तथा पशु आदि जेसे भी नीरोग तथा निर्मल मन वाले हों, वैसा आप करें.

अत्यधिक वन्दनशील, समस्त देवताओं में मुख्य, देवगणों के हितकारी तथा रोगों का नाश करने वाले रुद्र मुझसे सबसे अधिक बोलें, जिससे मैं सर्वश्रेष्ठ हो जाऊँ. हे रुद्र ! समस्त सर्प, व्याघ्र आदि हिंसकों का नाश करते हुए आप अधोगमन कराने वाली राक्षसियों को हमसे दूर कर दें. उदय के समय ताम्रवर्ण (अत्यन्त रक्त), अस्तकाल में अरुणवर्ण (रक्त), अन्य समय में वभ्रु (पिंगल) – वर्ण तथा शुभ मंगलों वाला जो यह सूर्यरूप है, वह रुद्र ही है. किरणरूप में ये जो हजारों रुद्र इन आदित्य के सभी ओर स्थित हैं, इनके क्रोध का हम अपनी भक्तिमय उपासना से निवारण करते हैं.

जिन्हें अज्ञानी गोप तथा जल भरने वाली दासियाँ भी प्रत्यक्ष देख सकती हैं, विष धारण करने से जिनका कण्ठ नीलवर्ण का हो गया है, तथापि विशेषत: रक्तवर्ण होकर जो सर्वदा उदय और अस्त को प्राप्त होकर गमन करते हैं,

वे रविमण्डल स्थित रुद्र हमें सुखी कर दें. नीलकण्ठ, सहस्त्र नेत्र वाले, इन्द्रस्वरुप और वृष्टि करने वाले रुद्र के लिए मेरा नमस्कार है. उस रुद्र के जो भृत्य हैं, उनके लिए भी मैं नमस्कार करता हूँ. हे भगवान ! आप धनुष की दोनों कोटियों के मध्य स्थित प्रत्यंचा का त्याग कर दें और अपने हाथ में स्थित बाणों को भी दूर फेंक दें.

जटाजूट धारण करने वाले रुद्र का धनुष प्रत्यंचा रहित रहे, तूणीर में स्थित बाणों के नोंकदार अग्रभाग नष्ट हो जाएँ, इन रुद्र के जो बाण हैं, वे भी नष्ट हो जाएँ तथा इनके खड्ग रखने का कोश भी खड्ग रहित हो जाए अर्थात वे रुद्र हमारे प्रति सर्वथा शस्त्ररहित हो जाएँ. अत्यधिक वृष्टि करने वाले हे रुद्र ! आपके हाथ में जो धनुषरूप आयुध है, उस सुदृढ़ तथा अनुपद्रवकारी धनुष से हमारी सब ओर से रक्षा कीजिए. हे रुद्र ! आपका धनुषरूप आयुध सब ओर से हमारा त्याग करे अर्थात हमें न मारे और आपका जो बाणों से भरा तरकश है, उसे हमसे दूर रखिए.

सौ तूणीर और सहस्त्र नेत्र धारण करने वाले हे रुद्र ! धनुष की प्रत्यंचा दूर करके और बाणों के अग्र भागों को तोड़कर आप हमारे प्रति शान्त और शुद्ध मन वाले हो जाएँ. हे रुद्र ! शत्रुओं को मारने में प्रगल्भ और धनुष पर न चढ़ाए गये आपके बाण के लिए हमारा प्रणाम है. आपकी दोनों बाहुओं और धनुष के लिए भी हमारा प्रणाम है.

हे रुद्र ! हमारे गुरु, पितृव्य आदि वृद्धजनों को मत मारिए, हमारे बालक की हिंसा मत कीजिए, हमारे तरुण को मत मारिए, हमारे गर्भस्थ शिशु का नाश मत कीजिए, हमारे माता-पिता को मत मारिए तथा हमारे प्रिय पुत्र-पौत्र आदि की हिंसा मत कीजिए. हे रुद्र ! हमारे पुत्र-पौत्र आदि का विनाश मत कीजिए, हमारी आयु को नष्ट मत कीजिए, हमारी गौओं को मत मारिए, हमारे घोड़ों का नाश मत कीजिए, हमारे क्रोधयुक्त वीरों की हिंसा मत कीजिए. हवि से युक्त होकर हम सब सदा आपका आवाहन करते हैं.

भुजाओं में सुवर्ण धारण करने वाले सेनानायक रुद्र के लिए नमस्कार है, दिशाओं के रक्षक रुद्र के लिए नमस्कार है, पूर्णरूप हरे केशों वाले वृक्षरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, जीवों का पालन करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, कान्तिमान बालतृण के समान पीत वर्ण वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, मार्गों के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है, नीलवर्ण केश से युक्त तथा मंगल के लिए यज्ञोपवीत धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, गुणों से परिपूर्ण मनुष्यों के स्वामी रुद्र के लिए नमस्कार है.

कपिल (वर्ण वाले अथवा वृषभ पर आरूढ़ होने वाले) तथा शत्रुओं को बेधने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, अन्नों के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है, संसार के आयुध रूप (अथवा जगन्निवर्तक) रुद्र के लिए नमस्कार है, जगत का पालन करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, उद्यत आयुध वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, देहों का पालन करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, न मारने वाले सारथीरूप रुद्र के लिए नमस्कार है तथा वनों के रक्षक रुद्र के लिए नमस्कार

है.

लोहित वर्ण वाले तथा गृह आदि के निर्माता विश्वकर्मारूप रुद्र के लिए नमस्कार है, वृक्षों के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है, भुवन का विस्तार करने वाले तथा समृद्धिकारक रुद्र के लिए नमस्कार है, वन के लता वृक्ष आदि के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है, युद्ध में उग्र शब्द करने वाले तथा शत्रुओं को रुलाने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, (हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल आदि) सेनाओं के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है.

कर्णपर्यन्त प्रत्यंचा खींचकर युद्ध में शीघ्रतापूर्वक दौड़ने वाले (अथवा सम्पूर्ण लाभ की प्राप्ति कराने वाले) रुद्र के लिए नमस्कार है, शरणागत प्राणियों के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है, शत्रुओं का तिरस्कार करने वाले तथा शत्रुओं को बेधने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, सब प्रकार से प्रहार करने वाली शूर सेनाओं के रक्षक रुद्र के लिए

नमस्कार है, खड्ग चलाने वाले महान रुद्र के लिए नमस्कार है, गुप्त चोरों के रक्षक रुद्र के लिए नमस्कार है, अपहार की बुद्धि से निरन्तर गतिशील तथा हरण की इच्छा से आपण (बाजार) – वाटिका आदि में विचरण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है तथा वनों के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है.

वंचना करने वाले तथा अपने स्वामी को विश्वास दिलाकर धन हरण करके उसे ठगने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, गुप्त धन चुराने वालों के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है, बाण तथा तूणीर धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, प्रकटरूप में चोरी करने वालों के पालक रुद्र के लिए नमस्कार है, वज्र धारण करने वाले तथा शत्रुओं को मारने की इच्छा वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, खेतों में धान्य आदि चुराने वालों के रक्षक रुद्र के लिए नमस्कार है, प्राणियों पर घात करने के लिए खड्ग धारण कर रात्रि में विचरण करने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है तथा दूसरों को काटकर उनका धन हरण करने वालों के पालक रुद्र

के लिए नमस्कार है.

सिर पर पगड़ी धारण करके पर्वतादि दुर्गम स्थानों में विचरने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, छलपूर्वक दूसरो के क्षेत्र, गृह आदि का हरण करने वालों के पालक रुद्ररूप के लिए नमस्कार है, लोगों को भयभीत करने के लिए बाण धारण करने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, धनुष धारण करने वाले आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, धनुष पर बाण का संधान करने वाले आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, धनुष को भली-भाँति खींचने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, बाणों को सम्यक् छोड़ने वाले आप रुद्रों के लिए नमस्कार है.

पापियों के दमन के लिए बाण चलाने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, शत्रुओं को बेधने वाले आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, स्वप्नावस्था का अनुभव करने वाले रुद्रों के

लिए नमस्कार है, जाग्रत अवस्था वाले आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, सुषुप्ति अवस्था वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, बैठे हुए आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, स्थित रहने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, स्थित रहने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, वेगवान गति वाले आप रुद्रों के लिए नमस्कार है.

सभारूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, सभापतिरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, अश्वरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, अश्वपतिरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, सब प्रकार से बेधन करने वाले देवसेनारूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, विशेषरूप से बेधन करने वाले देवसेनारूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, उत्कृष्ट भृत्यसमूहों वाली ब्राह्मी आदि मातास्वरुप रुद्रों के लिए नमस्कार है और मारने में समर्थ दुर्गा आदि मातास्वरुप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है.

देवानुचर भूतगणरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, भूतगणों

के अधिपतिरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, भिन्न-भिन्न जातिसमूहरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, विभिन्न जातिसमूहों के अधिपतिरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, मेधावी ब्रह्मजिज्ञासुरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, मेधावी ब्रह्मजिज्ञासुओं के अधिपतिरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, निकृष्ट रूपवाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, नानाविध रूपों वाले विश्वरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है.

सेनारूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, सेनापतिरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, रथीरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, रथविहीन आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, रथों के अधिष्ठातारूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, सारथिरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, जाति तथा विद्या आदि से उत्कृष्ट प्राणिरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, प्रमाण आदि से अल्परूप रुद्रों के लिए नमस्कार है.

शिल्पकाररूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, रथनिर्मातारूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, कुम्भकाररूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, लौहकाररूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, वन-पर्वतादि में विचरने वाले निषादरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, पक्षियों को मारने वाले पुल्कसादिरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, श्वानों के गले में बँधी रस्सी धारण करने वाले रुद्ररूपों के लिए नमस्कार है और मृगों की कामना करने वाले व्याधरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है.

श्वानरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, श्वानों के स्वामीरूप आप रुद्रों के लिए नमस्कार है, प्राणियों के उत्पत्तिकर्त्ता रुद्र के लिए नमस्कार है, दु:खों के विनाशक रुद्र के लिए नमस्कार है, पापों का नाश करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, पशुओं के रक्षक रुद्र के लिए नमस्कार है, हलाहलपान के फलस्वरुप नीलवर्ण के कण्ठ वाले रुद्र के लिए नमस्कार है और श्वेत कण्ठ वाले रुद्र के लिए नमस्कार है. जटाजूट धारण करने वाले रुद्र के लिए

नमस्कार है, मुण्डित केश वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, हजारों नेत्र वाले इन्द्ररूप रुद्र के लिए नमस्कार है, सैकड़ों धनुष धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, कैलास पर्वत पर शयन करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, सभी प्राणियों के अन्तर्यामी विष्णुरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, अत्यधिक सेचन करने वाले मेघरूप रुद्र के लिए नमस्कार है और बाण धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है.

अल्प देहवाले रुद्र के लिए नमस्कार है, संकुचित अंगो वाले वामनरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, बृहत्काय रुद्र के लिए नमस्कार है, अत्यन्त वृद्धावस्था वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, अधिक आयु वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, विद्याविनयादि गुणों से सम्पन्न विद्वानों के साथी रूप रुद्र के लिए नमस्कार है, जगत के आदिभूत रुद्र के लिए नमस्कार है और सर्वत्र मुख्यस्वरूप रुद्र के लिए नमस्कार है. जगद्व्यापी रुद्र के लिए नमस्कार है, गतिशील रुद्र के लिए नमस्कार है, वेगवाली वस्तुओं में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है, जलप्रवाह में विद्यमान आत्मश्लाघी रुद्र

के लिए नमस्कार है, जलतरंगों में व्याप्त रुद्र के लिए नमस्कार है, स्थिर जलरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, नदियों में व्याप्त रुद्र के लिए नमस्कार है और द्वीपों में व्याप्त रुद्र के लिए नमस्कार है.

अति प्रशस्य ज्येष्ठरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, अत्यन्त युवा (अथवा कनिष्ठ) – रूप के लिए नमस्कार है, जगत के आदि में हिरण्यगर्भरूप से प्रादुर्भूत हुए रुद्र के लिए नमस्कार है, प्रलय के समय कालाग्नि के सदृश रूप धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, सृष्टि और प्रलय के मध्य में देव-नर-तिर्यगादिरूप से उत्पन्न होने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, अव्युत्पन्नेन्द्रिय रुद्र के लिए नमस्कार है अथवा विनीत रुद्र के लिए नमस्कार है, (गाय आदि के) जघन प्रदेश से उत्पन्न होने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है और वृक्षादिकों के मूल में निवास करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है.

गन्धर्व नगर में होने वाले (अथवा पुण्य और पापों से युक्त मनुष्यलोक में उत्पन्न होने वाले) रुद्र के लिए नमस्कार है, प्रत्यभिचार में रहने वाले (अथवा विवाह के समय हस्तसूत्र में उत्पन्न होने वाले) रुद्र के लिए नमस्कार है, पापियों को नरक की वेदना देने वाले यम के अन्तर्यामी रुद्र के लिए नमस्कार है, कुशलकर्म में रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, वेद के मन्त्र (अथवा यश) – द्वारा उत्पन्न हुए रुद्र के लिए नमस्कार है, वेदान्त के तात्पर्यविषयीभूत रुद्र के लिए नमस्कार है, सर्व सस्यसम्पन्न पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले धान्यरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, धान्यविवेचन-देश (खलिहान) – में उत्पन्न हुए रुद्र के लिए नमस्कार है.

वनों में वृक्ष-लतादिरूप रुद्र अथवा वरुणस्वरुप रुद्रों के लिए नमस्कार है, शुष्क तृण अथवा गुल्मों में रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, प्रतिध्वनिस्वरुप रुद्र के लिए नमस्कार है, शीघ्रगामी सेना वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, शीघ्रगामी रथ वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, युद्ध में शूरता प्रदर्शित करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है तथा शत्रुओं

को विदीर्ण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है.

शिरस्त्राण धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, कपास-निर्मित देहरक्षक (अंगरखा) धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, लोहे का बख्तर धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, गुंबदयुक्त रथ वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, संसार में प्रसिद्ध रुद्र के लिए नमस्कार है, प्रसिद्ध सेनावाले रुद्र के लिए नमस्कार है, दुन्दुभी (भेरी) में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है, भेरी आदि वाद्यों को बजाने में प्रयुक्त होने वाले दण्ड आदि में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है.

प्रगल्भ स्वभाव वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, सत-असत का विवेकपूर्वक विचार करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, खड्ग धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, तूणीर (तरकश) धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, तीक्ष्ण बाणों वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, नानाविध

आयुधों को धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, उत्तम त्रिशूलरूप आयुध धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है और श्रेष्ठ पिनाक धनुष धारण करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है.

क्षुद्रमार्ग में विद्यमान रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, रथ-गज-अश्व आदि के योग्य विस्तृत मार्ग में विद्यमान रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, दुर्गम मार्गों में स्थित रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, जहाँ झरनों का जल गिरता है, उस भूप्रदेश में उत्पन्न हुए अथवा पर्वतों के अधोभाग में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है, नहर के मार्ग में स्थित अथवा शरीरों में अन्तर्यामी रूप से विराजमान रुद्र के लिए नमस्कार है, सरोवर में उत्पन्न होने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, सरितादिकों में विद्यमान जलरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, अल्प सरोवर में रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है.

कुपों में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है, गर्त स्थानों में रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, शरद-ऋतु के बादलों अथवा चन्द्र-नक्षत्रादि-मण्डल में विद्यमान विशुद्ध स्वभाव वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, मेघों में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है, विद्युत में होने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, वृष्टि में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है तथा अवर्षण में स्थित रुद्र के लिए नमस्कार है.

वायु में रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, प्रलयकाल में विद्यमान रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, गृह भूमि में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है अथवा सर्वशरीरवासी रुद्र के लिए नमस्कार है, गृहभूमि के रक्षकरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, चन्द्रमा में स्थित अथवा ब्रह्मविद्या महाशक्ति उमासहित विराजमान सदाशिव रुद्र के लिए नमस्कार है, सर्वविध अनिष्ट के विनाशक रुद्र के लिए नमस्कार है, उदित होने वाले सूर्य के रूप में ताम्रवर्ण के रुद्र के लिए नमस्कार है और उदय के पश्चात अरुण (कुछ-कुछ रक्त) वर्ण वाले रुद्र के लिए नमस्कार है.

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

भक्तों को सुख की प्राप्ति कराने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, जीवों के अधिपतिस्वरुप रुद्र के लिए नमस्कार है, संहार-काल में प्रचण्ड स्वरूप वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, अपने भयानकरूप से शत्रुओं को भयभीत करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, सामने खड़े होकर वध करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, दूर स्थित रहकर संहार करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, हनन करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, प्रलयकाल में सर्वहन्तारूप रुद्र के लिए नमस्कार है, हरितवर्ण के पत्ररूप केशों वाले कल्पतरुस्वरुप रुद्र के लिए नमस्कार है और ज्ञानोपदेश के द्वारा अधिकारी जनों को तारने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है.

सुख के उत्पत्ति स्थानरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, भोग तथा मोक्ष का सुख प्रदान करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, लौकिक सुख देने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, वेदान्तशास्त्र में होने वाले ब्रह्मात्मैक्य साक्षात्कारस्वरुप

रुद्र के लिए नमस्कार है, कल्याणरूप निष्पाप रुद्र के लिए नमस्कार है और अपने भक्तों को भी निष्पाप बनाकर कल्याणरूप कर देने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है. संसार समुद्र के अपर तीर पर रहने वाले अथवा संसारातीत जीवन्मुक्त विष्णुरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, संसार व्यापी रुद्र के लिए नमस्कार है, दु:ख-पापादि से प्रकृष्टरूप से तारने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, उत्कृष्ट ब्रह्म-साक्षात्कार कराकर संसार में तारने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, तीर्थस्थलों में प्रतिष्ठित रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, गंगा आदि नदियों के तट पर विद्यमान रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, गंगा आदि नदियों के तट पर उत्पन्न रहने वाले कुशांकुरादि बालतृणरूप रुद्र के लिए नमस्कार है और जल के विकारस्वरुप फेन में विद्यमान रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है.

नदियों की बालुकाओं में होने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, स्थिर जल से परिपूर्ण प्रदेशरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, जटामुकुटधारी रुद्र के लिए नमस्कार है, शुभाशुभ

देखने की इच्छा से सदा सामने खड़े रहने वाले अथवा सर्वान्तर्यामीस्वरुप रुद्र के लिए नमस्कार है, ऊसरभूमिरूप रुद्र के लिए नमस्कार है और अनेक जनों से संसेवित मार्ग में होने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है. गोसमूह में विद्यमान अथवा वज्र में गोपेश्वर के रूप में रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, गोशालाओं में रहने वाले गोष्ठ्यरुप रुद्र के लिए नमस्कार है, शय्या में विद्यमान रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, गृह में विद्यमान रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, हृदय में रहने वाले जीवरूपी रुद्र के लिए नमस्कार है, जल के भँवर में रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, दुर्ग-अरण्य आदि स्थानों में रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है और विषम गिरिगुहा आदि अथवा गम्भीर जल में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है.

काष्ठ आदि शुष्क पदार्थों में भी सत्तारूप से विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है, आर्द्र काष्ठ आदि में सत्तारुप से विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है, धूलि आदि में विराजमान पांसव्यरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, रजोगुण

अथवा पराग में विद्यमान रजस्यरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, सम्पूर्ण इन्द्रियों के व्यापार की शान्ति होने पर अथवा प्रलय में भी साक्षी बनकर रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है और प्रलयाग्नि में विद्यमान रुद्र के लिए नमस्कार है.

वृक्षों के पत्ररुप रुद्र के लिए नमस्कार है, वृक्ष-पर्णों के स्वत: शीर्ण होने के काल-वसन्त-ऋतुरूप रुद्र के लिए नमस्कार है, पुरुषार्थपरायण रहने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, सब ओर शत्रुओं का हनन करने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, सब ओर से अभक्तों को दीन-दु:खी बना देने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, अपने भक्तों के दु:खों से दु:खी होने के कारण दया से आर्द्र हृदय होने वाले रुद्र के लिए नमस्कार है, बाणों का निर्माण करने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, धनुषों का निर्माण करने वाले रुद्रों के लिए नमस्कार है, वृष्टि आदि के द्वारा जगत का पालन करने वाले देवताओं के हृदयभूत अग्नि-वायु-अदित्यरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है, धर्मात्मा तथा पापियों का भेद करने वाले अग्नि आदि रुद्रों के लिए नमस्कार है, भक्तों के पाप-रोग-अमंगल को

दूर करने वाले तथा पाप-पुण्य के साक्षीस्वरुप अग्नि आदि रुद्रों के लिए नमस्कार है और सृष्टि के आदि में मुख्यतया इन लोकों से निर्गत हुए अग्नि -वायु-सूर्यरूप रुद्रों के लिए नमस्कार है.

हे द्राप्रे (दुराचारियों को कुत्सित गति प्राप्त कराने वाले) ! हे अन्धसस्पते (सोमपालक) ! हे दरिद्र (निष्परिग्रह) ! हे नीललोहित ! हमारी पुत्रादि प्रजाओं तथा गौ आदि पशुओं को भयभीत मत कीजिए, उन्हें नष्ट मत कीजिए और उन्हें किसी भी प्रकार के रोग से ग्रसित मत कीजिए. जिस प्रकार से मेरे पुत्रादि तथा गौ आदि पशुओं को कल्याण की प्राप्ति हो तथा इस ग्राम में सम्पूर्ण प्राणी पुष्ट तथा उपद्रव रहित हों, इसके निमित्त हम अपनी इन बुद्धियों को महाबली, जटाजूटधारी तथा शूरवीरों के निवासभूत रुद्र के लिए समर्पित करते हैं.

हे रुद्र ! आपका जो शान्त, निरन्तर कल्याणकारक, संसार

की व्याधि निवृत्त करने वाला तथा शारीरिक व्याधि दूर करने का परम औषधिरूप शरीर है, उससे हमारे जीवन को सुखी कीजिए. रुद्र के आयुध हमारा परित्याग करें और क्रुद्ध हुए दोषी पुरुषों की दुर्बुद्धि हम लोगों को वर्जित कर दे (अर्थात उनसे हम लोगों को किसी प्रकार की पीड़ा न होने पाए). अभिलषित वस्तुओं की वृष्टि करने वाले हे रुद्र ! आप अपने धनुष को प्रत्यंचा रहित करके यजमान-पुरुषों के भय को दूर कीजिए और उनके पुत्र-पौत्रों को सुखी बनाइए.

अभीष्ट फल और कल्याणों की अत्यधिक वृष्टि करने वाले हे रुद्र ! आप हम पर प्रसन्न रहें, अपने त्रिशूल आदि आयुधों को कहीं दूर स्थित वृक्षों पर रख दीजिए, गजचर्म का परिधान धारण करके तप कीजिए और केवल शोभा के लिए धनुष धारण करके आइए. विविध प्रकार के उपद्रवों का विनाश करने वाले तथा शुद्धस्वरुप वाले हे रुद्र ! आपको हमारा प्रणाम है, आपके जो असंख्य आयुध हैं वे हमसे अतिरिक्त दूसरों पर जाकर गिरें.

गुण तथा ऐश्वर्यों से संपन्न हे जगत्पति रुद्र ! आपके हाथों में हजारों प्रकार के जो असंख्य आयुध हैं, उनके अग्रभागों (मुखों) को हमसे विपरीत दिशाओं की ओर कर दीजिए (अर्थात हम पर आयुधों का प्रयोग मत कीजिए). पृथ्वी पर जो असंख्य रुद्र निवास करते हैं, उनके असंख्य धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोसों के पार जो मार्ग है, उस पर ले जाकर डाल देते हैं. मेघमण्डल से भरे हुए इस महान अन्तरिक्ष में जो रुद्र रहते हैं, उनके असंख्य धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोसों के पार स्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं.

जिनके कण्ठ का कुछ भाग नीलवर्ण का है और कुछ भाग श्वेतवर्ण का है तथा जो द्युलोक में निवास करते हैं, उन रुद्रों के असंख्य धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोसों दूर स्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं. कुछ भाग में नीलवर्ण और कुछ भाग में शुक्ल वर्ण के कण्ठवाले तथा भूमि के अधोभाग में स्थित पाताल लोक

में निवास करने वाले रुद्रों के असंख्य धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोस दूर स्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं.

बाल तृण के समान हरितवर्ण के तथा कुछ भाग में नीलवर्ण एवं कुछ भाग में शुक्ल वर्ण के कण्ठ वाले, जो रुधिरहित रुद्र (तेजोमय शरीर रहने से उन शरीरों में रक्त और माँस नहीं रहता) हैं, वे अश्वत्थ आदि के वृक्षों पर रहते हैं. उन रुद्रों के धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोसों के पार स्थित मार्ग पर डाल देते हैं. अन्न देकर प्राणियों का पोषण करने वाले, आजीवन युद्ध करने वाले, लौकिक-वैदिक मार्ग का रक्षण करने वाले तथा अधिपति कहलाने वाले जो रुद्र हैं, उनके धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोसों के पार स्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं.

वज्र और खड्ग आदि आयुधों को हाथ में धारण कर जो

रुद्र तीर्थों पर जाते हैं, उनके धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोसों के पार स्थित मार्ग पर ले जाकर दाल देते हैं. खाए जाने वाले अन्नों में स्थित जो रुद्र अन्न भोक्ता प्राणियों को पीड़ित करते हैं (अर्थात धातुवैषम्य के द्वारा उनमें रोग उत्पन्न करते हैं) और पात्रों में स्थित दुग्ध आदि में विराजमान जो रुद्र, उनका पान करने वाले लोगों को (व्याधि आदि के द्वारा) कष्ट देते हैं, उनके धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोस स्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं.

दसों दिशाओं में व्याप्त रहने वाले जो अनेक रुद्र हैं, उनके धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हम लोग हजारों कोस दूर स्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं. जो रुद्र द्युलोक में विद्यमान हैं तथा जिन रुद्रों के बाण वृष्टिरूप हैं, उन रुद्रों के लिए नमस्कार है. उन रुद्रों के लिए पूर्व दिशा की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिण की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिम की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तर की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपर की ओर दसों

अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात हाथ जोड़कर सभी दिशाओं में उन रुद्रों के लिए प्रणाम करता हूँ). वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनाएँ. वे रुद्र जिस मनुष्य से द्वेष करते हैं, हम लोग जिससे द्वेष अरते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुष को हम लोग उन रुद्रों के भयंकर दाँतों वाले मुख में डालते हैं (अर्थात वे रुद्र हमसे द्वेष करने वाले मनुष्य का भक्षण कर जाएँ).

जो रुद्र अन्तरिक्ष में विद्यमान हैं तथा जिन रुद्रों के बाण पवनरूप हैं, उन रुद्रों के लिए नमस्कार है. उन रुद्रों के लिए पूर्व दिशा की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिण की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिम की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तर की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपर की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात हाथ जोड़कर सभी दिशाओं में उन रुद्रों के लिए प्रणाम करता हूँ). वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनाएँ. वे रुद्र जिस मनुष्य से द्वेष करते हैं, हम लोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष कररता है, उस पुरुष को हम लोग उन

रुद्रों के भयंकर दाँतों वाले मुख में डालते हैं (अर्थात वे रुद्र हमसे द्वेष करने वाले मनुष्य का भक्षण कर जाएँ).

जो रुद्र पृथ्वीलोक में स्थित हैं तथा जिनके बाण अन्नरुप हैं, उन रुद्रों के लिए नमस्कार है. उन रुद्रों के लिए पूर्व दिशा की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिण की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिम की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तर की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपर की ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात हाथ जोड़कर सभी दिशाओं में उन रुद्रों के लिए प्रणाम करता हूँ). वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनावें. वे रुद्र जिस मनुष्य से द्वेष करते हैं, हम लोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुष को हम लोग उन रुद्रों के भयंकर दाँतों वाले मुख में डालते हैं (अर्थात वे रुद्र हमसे द्वेष करने वाले मनुष्य का भक्षण कर जाएँ).

।। इस प्रकार रुद्रपाठ – रुद्राष्टाध्यायी – का पाँचवाँ

अध्याय भावार्थ पूर्ण हुआ ।।

रुद्राष्टाध्यायी – छठा अध्याय भावार्थ

हे सोमदेव ! पुत्र – पौत्रादि से संपन्न हम यजमान यज्ञ और व्रतों में आपके स्वरुप में चित्त लगाकर सेवनीय वस्तुओं का सेवन करें. हे रुद्र ! हमारे द्वारा दिया हुआ यह पुरोडाश आपका भाग है, आप अपनी भगिनी अम्बिका के साथ इसका सेवन कीजिए. यह प्रदत्त हवि सुहुत रहे. हमारे द्वारा अवकीर्ण किया गया यह पुरोडाश आपका भाग है, आपके द्वारा इसका सेवन किया जाए. हमने इस मूषकसंज्ञक पशु को आपके लिए अर्पित किया है. चित्त में रुद्र और त्र्यम्बक का ध्यान करके (अथवा अन्य देवताओं से पृथक करकके) हम रुद्र को अन्न खिलाते हैं. वे रुद्र हमें निवसनशील और ज्ञाति में श्रेष्ठ कर दें तथा वे हमें समस्त

कार्यों में शीघ्र निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करें, इसके लिए हम उनका जप करते हैं.

हे रुद्र ! आप औषधि के तुल्य समस्त उपद्रवों के निवारक हैं, अत: हमारे गाय, अश्व और भृत्य आदि को सर्वव्याधिनिवारक औषधि दीजिए और हमारे मेष तथा मेषी को सुख प्रदान कीजिए. दिव्य गन्ध गन्ध से युक्त, मृत्युरहित, धन-धान्यवर्धक, त्रिनेत्र रुद्र की हम पूजा करते हैं. वे रुद्र हमें अपमृत्यु और संसाररूप मृत्यु से मुक्त करें. जिस प्रकार ककड़ी का फल अत्यधिक पक जाने पर अपने वृन्त (डंठल) से मुक्त हो जाता है, उसी प्रकार हम भी मृत्यु से छूट जाएँ, किन्तु अभ्युदय और नि:श्रेयसरूप अमृत से हमारा संबंध न छूटने पाए. (अग्रिम वाक्य कुमारिकाओं का है) पति की प्राप्ति कराने वाले, सुगन्ध विशिष्ट त्रिनेर शिव की हम पूजा करती है. ककड़ी का फल परिपक्व होने पर जैसे अपने डंठल से छूट जाता है, उसी प्रकार हम कुमारियाँ माता, पिता, भाई आदि बन्धुजनों से तथा उस कुल से छूट जाएँ, किंतु त्र्यम्बक के प्रसाद से हम

अपने पति से न छूटें अर्थात पिता का गोत्र तथा घर छोड़कर पति के गोत्र तथा घर में सर्वदा रहें.

हे रुद्र ! आपका यह "अवस" (अवस का अर्थ है – प्रवास में किसी सरोवर के समीप विश्राम करने पर भक्षणयोग्य ओदन विशेष अर्थात खाने की कोई वस्तु) संज्ञक हवि:शेष भोज्य है, उसके सहित आप अपने धनुष की प्रत्यंचा को हटाकर मूजवान पर्वत के उस पार जाइए. (मूजवान पर्वत पर रुद्र निवास करते हैं) प्रवास करते समय आप अपने "पिनाक" नामक धनुष को सब ओर से आच्छादित कर लें, जिससे कोई भी प्राणी आपके धनुष को देखकर भयभीत न हो. हे रुद्र ! आप चर्माम्बर धारण करके हिंसा न करते हुए हमारी पूजा से संतुष्ट होकर मूजवान पर्वत को लाँघ जाइए.

जमदग्नि ऋषि की बाल्य-यौवन-वृद्धावस्था के जो उत्तम चरित्र हैं, कश्यप प्रजापति की तीनों अवस्थाओं के जो

उत्तम चरित्र हैं तथा देवगणों में भी उनकी तीनों अवस्थाओं के जो प्रशंसनीय चरित्र विद्यमन हैं, तीनों अवस्थाओं से संबंधित वैसा ही चरित्र हम यजमानों का भी हो. हे क्षुर ! आपका नाम "शान्त" है. वज्र आपके पिता हैं, मैं आपके लिए नमस्कार करता हूँ. आप मेरी हिंसा मत कीजिए. हे यजमान ! बहुत दिनों तक जीवित रहने के लिए, अन्न-भक्षण करने के लिए, संतति के लिए, द्रव्य-वृद्धि के लिए, योग्य संतान उत्पन्न होने के लिए तथा उत्तम सामर्थ्य की प्राप्ति के लिए मैं आपका मुण्डन करता हूँ.

।। इस प्रकार रुद्रपाठ – रुद्राष्टाध्यायी – का छठा अध्याय पूर्ण हुआ ।।

रुद्राष्टाध्यायी – सातवाँ अध्याय भावार्थ

उग्र (उत्कट क्रोध स्वभाव वाले), भीम (भयानक), ध्वान्त (तीव्र ध्वनि करने वाले), धुनि (शत्रुओं को कम्पित करने

वाले), सासह्वान (शत्रुओं को तिरस्कृत करने में समर्थ), अभियुग्वा (हमारे सम्मुख योग प्राप्त करने वाले) और विक्षिप (वृक्ष-शाखादि का क्षेपण करने वाले) नाम वाले जो सात मरुत् हैं, उन्हें मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ. मैं अग्नि को हृदय के द्वारा, अशनिदेव को हृदयाग्र से, पशुपति को सारे हृदय से, भव को यकृत से, शर्व को मतस्ना नामक हृदय स्थल से, ईशान देवता को क्रोध से, महादेव को पसलियों के अन्तर्भाग से, उग्र देवता को बड़ी आँत से और शिंगी नामक देवताओं को हृदयकोष स्थित पिण्डों से प्रसन्न करता हूँ.

उग्र देवता को रुधिर से, मित्र देवता को शुभ कर्मों के अनुष्ठान से, रुद्र देवता को अशोभन कर्मों से, इन्द्र देवता को प्रकृष्ट क्रीडाओं से, मरुत् देवताओं को बल से, साध्य देवताओं को हर्ष से, भव देवताओं को कण्ठ भाग से, रुद्र देवता को पसलियों के अन्तर्भाग से, महादेव को यकृत से, शर्व देवता को बड़ी आँत से और पशुपति देवता को पुरीतत् (हृदयाच्छादक भाग विशेष) से संतुष्ट करता हूँ.

समष्टि लोमों के लिए यह श्रेष्ठ आहुति देता हूँ, व्यष्टि लोमों के लिए यह श्रेष्ठ आहुति देता हूँ, समष्टि त्वचा के लिए, व्यष्टि त्वचा के लिए, समष्टि रुधिर के लिए, व्यष्टि रुधिर के लिए, समष्टि मेदा के लिए, व्यष्टि मेदा के लिए, समष्टि मांस के लिए, व्यष्टि मांस के लिए, समष्टि नसों के लिए, व्यष्टि नसों के लिए, समष्टि अस्थियों के लिए, व्यष्टि अस्थियों के लिए, समष्टि मज्जा के लिए, व्यष्टि मज्जा के लिए, वीर्य के लिए और पायु इन्द्रिय के लिए मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ.

आयास देवता के लिए, प्रायास देवता के लिए, संयास देवता के लिए, वियास देवता के लिए और उद्यास देवता के लिए, शुचि के लिए, शोचत् के लिए, शोचमान के लिए और शोक के लिए मैं यह श्रेष्ठ आहुति प्रदान करता हूँ. तप के लिए, तपकर्ता के लिए, तप्यमान के लिए, तप्त के लिए, घर्म के लिए, निष्कृति के लिए, प्रायश्चित के लिए और

औषध के लिए मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ. यम के लिए, अन्तक के लिए, मृत्यु के लिए, ब्रह्मा के लिए, ब्रह्महत्या के लिए, विश्वेदेवों के लिए, द्युलोक के लिए तथा पृथ्वीलोक के लिए मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ.

।। इस प्रकार रुद्रपाठ – रुद्राष्टाध्यायी – का सातवाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

रुद्राष्टाध्यायी – आठवां अध्याय भावार्थ

अन्न, अन्नदान की अनुज्ञा, शुद्धि, अन्न-भक्षण की उत्कण्ठा, श्रेष्ठ संकल्प, सुन्दर शब्द, स्तुति-सामर्थ्य, वेदमन्त्र अथवा श्रवणशक्ति, ब्राह्मण, प्रकाश और स्वर्ग – ये सब मेरे द्वारा किए गए यज्ञ के फल के रुप में मुझे प्राप्त हों.

प्राणवायु, अपानवायु, सारे शरीर में विचरण करने वाला व्यानवायु, मनुष्यों को प्रवृत्त करने वाला वायु,

मानससंकल्प, बाह्यविषयसंबंधी ज्ञान, वाणी, शुद्ध मन, पवित्र दृष्टि, सुनने की सामर्थ्य, ज्ञानेन्द्रियों का कौशल तथा कर्मेन्द्रियों में बल – ये सब मेरे द्वारा किए गए यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

बल का कारणभूत ओज, देहबल, आत्मज्ञान, सुन्दर शरीर, सुख, कवच, हृष्ट-पुष्ट अंग, सुदृढ़ हड्डियाँ, सुदृढ़ अंगुलियाँ, नीरोग शरीर, जीवन और वृद्धावस्थापर्यन्त आयु – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

प्रशस्तता, प्रभुता, दोषों पर कोप, अपराध पर क्रोध, अपरिमेयता, शीतल-मधुर जल, जीतने की शक्ति, प्रतिष्ठा, संतान की वृद्धि, गृह-क्षेत्र आदि का विस्तार, दीर्घ जीवन, अविच्छिन्न वंश परंपरा, धन-धान्य की वृद्धि और विद्या आदि गुणों का उत्कर्ष – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

यथार्थ भाषण, परलोक पर विश्वास, गौ आदि पशु, सुवर्ण आदि धन, स्थावर पदार्थ, कीर्ति, क्रीड़ा, क्रीड़ादर्शन – जनित आनन्द, पुत्र से उत्पन्न संतान, होने वाली संतान, शुभदायक ऋचाओं का समूह और ऋचाओं के पाठ से शुभ फल – ये सब मेरे द्वार किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

यज्ञ आदि कर्म और उनका स्वर्ग आदि फल, धातुक्षय आदि रोगों का अभाव तथा सामान्य व्याधियों का न रहना, आयु बढ़ाने वाले साधन, दीर्घायु, शत्रुओं का अभाव, निर्भयता, सुख, सुसज्जित शय्या, संध्या-वंदन से युक्त प्रभात और यज्ञ-दान-अध्ययनआदि से युक्त दिन – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

अश्व आदि का नियन्तृत्व और प्रजा पालन की क्षमता,

वर्तमान धन की रक्षणशक्ति, आपत्ति में चित्त की स्थिरता, सबकी अनुकूलता, पूजा-सत्कार, वेदशास्त्र आदि का ज्ञान, विज्ञान-सामर्थ्य, पुत्र आदि को प्रेरित करने की क्षमता, पुत्रोत्पत्ति आदि के लिए सामर्थ्य, हल आदि के द्वारा कृषि से अन्न-उत्पादन और कृषि में अनावृष्टि आदि विघ्नों का विनाश – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

इस लोक का सुख, परलोक का सुख, प्रीति-उत्पादक वस्तु, सहज यत्नसाध्य पदार्थ, विषयभोगजनित सुख, मन को स्वस्थ करने वाले बन्धु-बान्धव, सौभाग्य, धन, इस लोक का और परलोक का कल्याण, धन से भरा निवासयोग्य गृह तथा यश – ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञ के फल के रुप में मुझे प्राप्त हों. अन्न, सत्य और प्रिय वाणी, दूध, दूध का सार, घी, शहद, बान्धवों के साथ खान-पान, धान्य की सिद्धि, अन्न उत्पन्न होने के कारण अनुकूल वर्षा, विजय की शक्ति तथा आम आदि वृक्षों की उत्पत्ति – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे

प्राप्त हों.

सुवर्ण, मौक्तिक आदि मणियाँ, धन की प्रचुरता, शरीर की पुष्टि, व्यापकता की शक्ति, ऐश्वर्य, धन-पुत्र आदि की बहुलता, हाथी-घोड़ा आदि की अधिकता, कुत्सित धान्य, अक्षय अन्न, भात आदि सिद्धान्न तथा भोजन पचाने की शक्ति – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

पूर्वप्राप्त धन, प्राप्त होने वाला धन, पूर्वप्राप्त क्षेत्र आदि, भविष्य में प्राप्त होने वाले क्षेत्र आदि, सुगम्य देश, परम पथ्य पदार्थ, समृद्ध यज्ञ-फल, यज्ञ आदि की समृद्धि, कार्यसाधक अपरिमित धन, कार्य साधन की शक्ति, पदार्थ मात्र का निश्चय तथा दुर्घट कार्यों का निर्णय करने की बुद्धि – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

उत्कृष्ट कोटि के धान्य, यव, उड़द, तिल, मूँग, चना, प्रियंगु, चीनक धान्य, सावाँ, नीवार, गेहूँ और मसूर – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों. सुन्दर पाषाण और श्रेष्ठ मूर्त्तिका, गोवर्धन आदि छोटे पर्वत, हिमालय आदि विशाल पर्वत, रेतीली भूमि, वनस्पतियाँ, सुवर्ण, लोहा, ताँबा, काँसा, सीसा तथा राँगा – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

पृथ्वी पर अग्नि की तथा अन्तरिक्ष में जल की अनुकूलता, छोटे-छोटे तृण, पकते ही सूखने वाली औषधियाँ, जोतने-बोने से उत्पन्न होने वाले तथा बिना जोते-बोए स्वयं उत्पन्न होने वाले अन्न, गाय-भैंस आदि ग्राम्य पशु तथा हाथी-सिंह आदि जंगली पशु, पूर्वलब्ध तथा भविष्य में प्राप्त होने वाला धन, पुत्र आदि तथा ऐश्वर्य – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

गो आदि धन, रहने के लिए सुन्दर घर, अग्निहोत्र आदि

कर्म तथा उनके अनुष्ठान की सामर्थ्य, इच्छित पदार्थ, प्राप्तियोग्य पदार्थ, इष्टप्राप्ति का उपाय एवं इष्टप्राप्ति – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों. अग्नि और इन्द्र, सोम तथा इन्द्र, सविता और इन्द्र, सरस्वती तथा इन्द्र, पूषा तथा इन्द्र, बृहस्पति और इन्द्र – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों. मित्रदेव एवं इन्द्र, वरुण तथा इन्द्र, धाता और इन्द्र, त्वष्टा तथा इन्द्र, मरुद्गण और इन्द्र, विश्वेदेव और इन्द्र – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रुप में मुझे प्राप्त हों.

पृथ्वी और इन्द्र, अन्तरिक्ष एवं इन्द्र, स्वर्ग तथा इन्द्र, वर्ष की अधिष्ठात्री देवता तथा इन्द्र, नक्षत्र और इन्द्र, दिशाएँ तथा इन्द्र – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

अंशु, रश्मि, अदाभ्य, निग्राह्य, उपांशु, अन्तर्याम, ऐन्द्रवायव,

मैत्रावरुण, आश्विन, प्रतिप्रस्थान, शुक्र और मन्थी – ये सभी मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

आग्रयण, वैश्वदेव, ध्रुव, वैश्वानर, ऐन्द्राग्न, महावैश्वदेव, मरुत्त्वतीय, निष्केवल्य, सावित्र, सारस्वत, पात्नीवत एवं हारियोजन – ये यज्ञग्रह मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

स्रुक्, चमस, वायव्य, द्रोणकलश, ग्रावा, काष्ठफलक, पूतभृत्, आधवनीय, वेदी, कुशा, अवभृथ और शम्युवाक – ये सब यज्ञपात्र मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

अग्निष्टोम, प्रवर्ग्य, पुरोडाश, सूर्यसंबंधी चरु, प्राण, अश्वमेधयज्ञ, पृथ्वी, अदिति, दिति, द्युलोक, विराट् पुरुष के

अवयव, सब प्रकार की शक्तियाँ और पूर्व दिशाएँ – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

व्रत, वसन्त आदि ऋतुएँ, कृच्छ्र-चान्द्रायण आदि तप, प्रभव आदि संवत्सर, दिन-रात, जंघा तथा जानु – ये शरीरावयव और बृहद् तथा रथन्तर साम – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

एक और तीन, तीन तथा पाँच, पाँच और सात, सात तथा नौ, नौ तथा ग्यारह, ग्यारह और तेरह, तेरह और पंद्रह, पंद्रह तथा सत्रह, सत्रह तथा उन्नीस, उन्नीस और इक्कीस, इक्कीस तथा तीईस, तेईस और पच्चीस, पच्चीस तथा सत्ताईस, सत्ताईस तथा उनतीस, उनतीस और इकतीस, इकतीस तथा तैंतीस – इन सब संख्याओं से कहे जाने वाले सकल श्रेष्ठ पदार्थ मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

चार तथा आठ, आठ और बारह, बारह तथा सोलह, सोलह और बीस, बीस और चौबीस, चौबीस तथा अट्ठाईस, अट्ठाईस और बत्तीस, बत्तीस तथा छत्तीस, छत्तीस और चालीस, चालीस तथा चवालीस, चवालीस तथा अड़तालीस – इन सब संख्याओं से कहे जाने वाले सकल श्रेष्ठ पदार्थ मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

डेढ़ वर्ष का बछड़ा, डेढ़ वर्ष की बछिया, दो वर्ष का बछड़ा, दो वर्ष की बछिया, ढ़ाई वर्ष का बैल, ढ़ाई वर्ष की गाय, तीन वर्ष का बैल तथा तीन वर्ष की गाय, साढ़े तीन वर्ष का बैल और साढ़े तीन वर्ष की गाय – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों.

चार वर्ष का बैल, चार वर्ष की गाय, सेचन में समर्थ वृषभ, वन्ध्या गाय, तरुण वृषभ, गर्भघातिनी गाय, भार वहन

करने में समर्थ बैल तथा नवप्रसूता गाय – ये सब मेरे द्वारा किए गए इस यज्ञ के फल के रूप में मुझे प्राप्त हों. प्रचुर अन्न की उत्पत्ति करने वाले अन्नरूप चैत्र मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, वैशाख मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, जल-क्रीडा में सुखदायक ज्येष्ठ मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, यागरूप आषाढ़ मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, चातुर्मास्य में यात्रा का निषेध करने वाले श्रावण मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, दिन के स्वामी सूर्यरूप भाद्रपद मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, तुषार आदि से मोहकारक दिवस वाले आश्विन (क्वार) – मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, स्नान आदि से प्राणियों का पाप नाश करने के कारण मोहनिवर्तक तथा दिनमान के थोड़ा घटने विनाशशील कार्तिक मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, सम्पूर्ण सृष्टि के विनाश के बाद भी विद्यमान रहने वाले अविनाशी विष्णुरूप मार्गशीर्ष (अगहन) मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, अन्त में स्थित रहने वाले तथा प्राणियों के पोषक पौष मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, सम्पूर्ण लोकों के

पालकरूप माघ मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है और सभी प्राणियों के लिए सर्वाधिक पालक फाल्गुन मास के लिए यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है.

बारहों मासों के अधिष्ठातृदेव प्रजापति के लिए यह श्रेष्ठ आहुति दी जाती है. हे प्रजापतिस्वरुप अग्निदेव! यह यज्ञस्थान आपका राज्य है, अग्निष्टोम आदि कर्मों में सबके नियन्ता आप मित्ररूप इस यजमान के प्रेरक हैं. अधिक अन्न आदि की प्राप्ति के लिए मैं आपका अभिषेक करता हूँ, वर्षा के लिए मैं आपका अभिषेक करता हूँ और प्रजाओं पर प्रभुता-प्राप्ति के लिए मैं आपका अभिषेक करता हूँ.

यज्ञ के फल से मेरी आयु में वृद्धि हो, यज्ञ के फलस्वरुप मेरे प्राण बलिष्ठ हों, यज्ञ के फलस्वरुप नेत्रों की ज्योति बढ़े, यज्ञ के फल से श्रवणशक्ति उत्कृष्टता को प्राप्त हो, यज्ञ के फल से वाणी में श्रेष्ठता रहे, यज्ञ के फलस्वरुप मन सदा

स्व च्छ रहे, यज्ञ के फलस्वरुप आत्मा बलवान हो, यज्ञ के फलस्वरुप सभी वेद मेरे ऊपर प्रसन्न रहें, इस यज्ञ के फलस्वरुप मुझे परमात्मा की दिव्य ज्योति प्राप्त हो, यज्ञ के फलस्वरुप स्वर्ग की प्राप्ति हो, यज्ञ के फलस्वरुप संसार का सर्वश्रेष्ठ सुख प्राप्त हो, यज्ञ के फलस्वरुप महायज्ञ करने की सामर्थ्य प्राप्त हो, त्रिवृत्पंचदश आदि स्तोम, यजुर्मन्त्र, ऋचाएँ, साम की गीतियाँ, बृहत्साम और रथन्तर साम – ये सब यज्ञ के फल से मेरे ऊपर अनुग्रह करें, मैं यज्ञ के फल से देवत्व को प्राप्त कर स्वर्ग जाऊँ तथा अमर हो जाऊँ, यज्ञ के प्रसाद से हम हिरण्यगर्भ प्रजापति की प्रियतम प्रजा हों. समस्त देवताओं के निमित्त यह वसोर्धारा हवन सम्पन्न हुआ, ये सभी आहुतियाँ उन्हें भली-भाँति समर्पित हैं.

।। इस प्रकार रुद्रपाठ – रुद्राष्टाध्यायी – का आठवाँ अध्याय भावार्थ पूर्ण हुआ ।।

रुद्राष्टाध्यायी शान्त्यध्याय भावार्थ

मैं ऋचारूप वाणी की शरण लेता हूँ, मैं यजु:स्वरूप मन की शरण लेता हूँ, मैं प्राणरूप साम की शरण लेता हूँ और मैं चक्षु-इन्द्रिय तथा श्रोत्र-इन्द्रिय की शरण लेता हूँ. वाक् – शक्ति, शारीरिक बल और प्राण-अपानवायु – ये सब मुझ में स्थिर हों. मेरे नेत्र तथा हृदय की जो न्यूनता है और मन की जो व्याकुलता है, उसे देवगुरु बृहस्पति दूर करें अर्थात यज्ञ करते समय मेरे नेत्र, हृदय तथा मन से जो त्रुटि हो गई है, उसे वे क्षमा करें. सम्पूर्ण भुवन के जो अधिपतिरूप भगवान यज्ञपुरुष हैं, वे हमारे लिए कल्याणकारी हों.

उन प्रकाशात्मक जगत्स्रष्टा सविता देव के भूर्लोक, भुवर्लोक तथा स्वर्लोक में व्याप्त रहने वाले परब्रह्मात्मक सर्वोतम तेज का हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों के अनुष्ठान हेतु प्रेरित करें. सदा सबको समृद्ध करने वाला आश्चर्यरूप परमेश्वर किस तर्पण या प्रीति से तथा किस वर्तमान याग-क्रिया से हमारा सहायक होता है अर्थात हम कौन-सी उत्तम क्रिया करें और कौन-सा शोभन कर्म करें, जिससे परमात्मा हमारे सहायक हों और अपनी

पालन शक्ति द्वारा हमारे वृद्धिकारी सखा हों.

हे परमेश्वर ! मदजनक हवियों में श्रेष्ठ सोमरुप अन्न का कौन-सा अंश आपको सर्वाधिक तृप्त करता है? आपकी इस प्रसन्नता में दृढ़ता से रहने वाले हम भक्तजन अपने धन आदि के साथ उसे आपको समर्पित करते हैं. हे परमेश्वर ! आप मित्रों के तथा स्तुति करने वाले हम ऋत्विजों के पालक हैं और हम भक्तों की रक्षा के लिए भली-भाँति अभिमुख होकर आप अनन्त रूप धारण करते हैं. हे इन्द्र ! आप किस तृप्ति अथवा हविदान से हमें प्रसन्न करते हैं? और किस दिव्यरूप को धारण कर स्तुति करने वाले हम उपासकों की सारी अभिलाषाओं को पूरा करते हैं?

सबके स्वामी परमेश्वर चारों तरफ प्रकाशमान हैं. वे हमारे पुत्र आदि के लिए कल्याणरूप हों, वे हमारे गौ आदि पशुओं के लिए सुखदायक हों. मित्रदेवता हमारे लिए

कल्याणमय हों, वरुणदेवता हमारे लिए कल्याणकारी हों, अर्यमा हमारे लिए कल्याणप्रद हों, इन्द्र देवता हमारे लिए कल्याणमय हों, बृहस्पति हमारे लिए कल्याणकारी हों तथा विस्तीर्ण पादन्यास वाले विष्णु हमारे लिए कल्याणमय हों. वायुदेव हमारे लिए सुखकारी होकर बहें, सूर्यदेव हमारे निमित्त सुखरूप होकर तपें और पर्जन्य देवता शब्द करते हुए हमारे निमित्त सुखदायक वर्षा करें.

दिन हमारे लिए सुखकारी हों, रात्रियाँ हमारे लिए सुखरूप हों, इन्द्र और अग्नि देवता हमारी रक्षा करते हुए सुखरूप हों, हवि से तृप्त इन्द्र और वरुण देवता हमारे लिए कल्याणकारी हों, अन्न की उत्पत्ति करने वाले इन्द्र और पूषा देवता हमारे लिए सुखकारी हों एवं इन्द्र और सोम देवता श्रेष्ठ गमन अथवा श्रेष्ठ उत्पत्ति के निमित्त और रोगों का नाश करने के लिए तथा भय दूर करने के लिए हमारे लिए कल्याणकारी हों. दीप्तिमान जल हमारे अभीष्ट स्नान के लिए सुखकर हो, पीने के लिए स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्यकारी हो, यह जल हमारे रोग तथा भय को दूर

करने के लिए निरन्तर प्रवाहित होता रहे.

हे पृथिवि ! निष्कण्टक सुख में स्थित रहने वाली तथा अति विस्तारयुक्त आप हमारे लिए सुखकारी बनें और हमें शरण प्रदान करें. हे जलदेवता ! आप जल देने वाले हैं और सुख की भावना करने वाले व्यक्ति के लिए स्नान-पान आदि के द्वारा सुख के उत्पादक हैं. हमारे रमणीय दर्शन और रसानुभव के निमित्त यहाँ स्थापित हो जाइए. हे जल देवता ! आपका जो शान्तरुप सुख का एकमात्र कारण रस इस लोक में स्थित है. हमको उस रस का भागी उसी तरह से बनाएँ जैसे प्रीतियुक्त माता अपने बच्चे को दूध पिलाती है.

हे जल देवता ! आपके उस रस की प्राप्ति के लिए हम शीघ्र चलना चाहते हैं, जिसके द्वारा आप सारे जगत को तृप्त करते हैं, और हमें भी उत्पन्न करते हैं. द्युलोकरूप शान्ति, अन्तरिक्षरूप शान्ति, भूलोकरूप शान्ति, जलरूप

शान्ति, औषधिरूप शान्ति, वनस्पतिरूप शान्ति, सर्वदेवरुप शान्ति, ब्रह्मरूप शान्ति, सर्वजगत-रूप शान्ति और संसार में स्वभावत: जो शान्ति रहती है, वह शान्ति मुझे परमात्मा की कृपा से प्राप्त हो. हे महावीर परमेश्वर ! आप मुझको दृढ़ कीजिए, सभी प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें, मैं भी सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ और हम लोग परस्पर द्रोहभाव से सर्वथा रहित होकर सभी को मित्र की दृष्टि से देखें.

हे भगवन ! आप मुझे सब प्रकार से दृढ़ बनाएँ. आपके संदर्शन में अर्थात आपकी कृपा दृष्टि से मैं दीर्घ काल तक जीवित रहूँ. हे अग्निदेव ! सब रसों को आकर्षित करने वाली आपकी तेजस्विनी ज्वाला को नमस्कार है, आपके पदार्थ-प्रकाशक तेज को नमस्कार है. आपकी ज्वालाएँ हमें छोड़कर दूसरों के लिए तापदायक हों और आप हमारा चित्त-शोधन करते हुए हमारे लिए कल्याणकारक हों.

विद्युत रूप आपके लिए नमस्कार है, गर्जनारूप आपके लिए नमस्कार है, आप सभी प्राणियों को स्वर्ग का सुख देने की चेष्टा करते हैं, इसलिए आपके लिए नमस्कार है. हे परमेश्वर ! आप जिस रुप से हमारे कल्याण की चेष्टा करते हैं उसी रुप से हमें भयरहित कीजिए, हमारी संतानों का कल्याण कीजिए और हमारे पशुओं को भी भयमुक्त कीजिए. जल और औषधियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों और हमारे उस शत्रु के लिए वे अमंगलकारी हों, जो हमारे प्रति द्वेषभाव रखता है अथवा हम जिसके प्रति द्वेषभाव रखते हैं.

देवताओं द्वारा प्रतिष्ठित, जगत के नेत्रस्वरुप तथा दिव्य तेजोमय जो भगवान आदित्य पूर्व दिशा में उदित होते हैं उनकी कृपा से हम सौ वर्षों तक देखें अर्थात सौ वर्षों तक हमारी नेत्र ज्योति बनी रहे, सौ वर्षों तक सुखपूर्वक जीवन -यापन करें, सौ वर्षों तक सुनें अर्थात सौ वर्षों तक श्रवणशक्ति से संपन्न रहें, सौ वर्षों तक अस्खलित वाणी से

युक्त रहें, सौ वर्षों तक दैन्यभाव से रहित रहें अर्थात किसी के समक्ष दीनता प्रकट न करें. सौ वर्षों से ऊपर भी बहुत काल तक हम देखें, जीयें, सुनें, बोलें और अदीन रहें.

।। इस प्रकार रुद्रपाठ – रुद्राष्टाध्यायी – का शान्त्यध्याय पूर्ण हुआ ।।

रुद्राष्टाध्यायी स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय भावार्थ

महती कीर्ति वाले ऐश्वर्यशाली इन्द्र हमारा कल्याण करें, सर्वज्ञ तथा सबके पोषणकर्ता पूषादेव (सूर्य) हमारे लिए मंगल का विधान करें. चक्रधारा के समान जिनकी गति को कोई रोक नहीं सकता, वे तार्क्ष्यदेव हमारा कल्याण करें और वेदवाणी के स्वामी बृहस्पति हमारे लिए कल्याण का विधान करें. हे अग्निदेव ! आप हमारे लिए पृथ्वी पर रस धारण कीजिए, औषधियों में रस डालिए, स्वर्गलोक तथा अन्तरिक्ष में रस स्थापित कीजिए, आहुति देने से

सारी दिशाएँ और विदिशाएँ मेरे लिए रस से परिपूर्ण हो जाएँ.

हे दर्भमालाधार वंश ! तुम यज्ञरूप विष्णु के ललाटस्थानीय हो. हे ललाट के प्रान्तद्वय ! तुम दोनों यज्ञरूप विष्णु के ओष्ठसन्धिरूप हो. हे बृहत-सूची ! तुम यज्ञीय मण्डप की सूची हो. हे ग्रंथि ! तुम यज्ञीय विष्णुरुप मण्डप की मजबूत गाँठ हो. हे हविर्धान ! तुम विष्णुसंबंधी हो, इस कारण विष्णु की प्रीति के लिए तुम्हारा स्पर्श करता हूँ. दोनों हविर्धानों (शकटों) को दक्षिणोत्तर स्थापित करके उनके ढक्कनों का मण्डप बनाएँ. हविर्धान-मण्डप के पूर्वद्वारवर्ती स्तम्भ के मध्य में कुशों की माला गूँथे.

अग्नि देवता, वायु देवता, सूर्य देवता, चन्द्र देवता, वसु देवता, रुद्र देवता, आदित्य देवता, मरुत् – देवता, विश्वेदेव देवता, बृहस्पति देवता, इन्द्र देवता और वरुण देवता का स्मरण करके मैं इस इष्टका को स्थापित करता हूँ. मैं

“सद्योजात” नामक परमेश्वर की शरण लेता हूँ. पश्चिमाभिमुख भगवान सद्योजात के लिए प्रणाम हैं. हे रुद्रदेव ! अनेक बार जन्म लेने हेतु मुझे प्रेरित मत कीजिए, किंतु जन्म से दूर करने के निमित्त मुझे तत्त्वज्ञान के लिए प्रेरणा प्रदान कीजिए. संसार के उद्धारकर्ता सद्योजात के लिए नमस्कार है.

उत्तराभिमुख वामदेव के लिए नमस्कार है. उन्हीं के विग्रहस्वरुप ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, रुद्र, काल, कलविकरण, बलविकरण, बल, बलप्रमथन, सर्वभूतदमन तथा मनोन्मन – इन महादेव की पीठाधिष्ठित शक्तियों के स्वामियों को नमस्कार है. दक्षिणाभिमुख सत्त्वगुणयुक्त “अघोर” नामक रुद्रदेव के लिए प्रणाम है. इसी प्रकार राजसगुणयुक्त “घोर” तथा तामसगुणयुक्त “घोरतर” नामक रुद्र के लिए प्रणाम है. हे शर्व ! आपके रुद्र आदि सभी रूपों के लिए नमस्कार है.

हम लोग उस पूर्वाभिमुख “तत्पुरुष” महादेव को गुरु तथा शास्त्रमुख से जानते हैं, ऐसा जानकर हम उन महादेव का ध्यान करते हैं, इसलिए वे रुद्र हमको ज्ञान-ध्यान के लिए प्रेरित करें. उन ऊर्ध्वमुखी भगवान “ईशान” के लिए प्रणाम है जो वेदशास्त्रादि विद्या और चौंसठ कलाओं के नियामक, समस्त प्राणियों के स्वामी, वेद के अधिपति एवं हिरण्यगर्भ के स्वामी हैं. वे साक्षात ब्रह्मस्वरुप परमात्मा शिव हमारे लिए कल्याणकारी हों (अथवा उनकी कृपा से मैं भी सदाशिवस्वरुप हो जाऊँ).

हे क्षुर ! आपका नाम “शान्त” है. आपके पिता वज्र हैं. मैं आपके लिए नमस्कार करता हूँ. आप मुझे किसी प्रकार की क्षति मत पहुँचाइए. हे यजमान ! आपके बहुत दिनों तक जीवित रहने के लिए, अन्न भक्षण करने के लिए, संतति के लिए, द्रव्यवृद्धि के लिए तथा उत्तम अपत्य उत्पन्न होने के लिए और उत्तम सामर्थ्य की प्राप्ति के लिए मैं आपका वपन (मुण्डन) करता हूँ. हे सूर्यदेव ! आप मेरे सभी पापों को दूर कीजिए और जो कुछ भी मेरे लिए

कल्याणकारी हो, उसे मुझे प्राप्त कराइए.

द्युलोकरूप शान्ति, अन्तरिक्षरुप शान्ति, भूलोकरूप शान्ति, जलरुप शान्ति, औषधिरुप शान्ति, वनस्पतिरुप शान्ति, सर्वदेवरुप शान्ति, ब्रह्मरुप शान्ति, सर्वजगत्-रूप शान्ति और संसार में स्वभावत: जो शान्ति रहती है, वह शान्ति मुझे परमात्मा की कृपा से प्राप्त हो. सभी वेदों का तत्त्वस्वरुप रस, जो सामवेद अथवा भगवान साम (भगवान विष्णु या कृष्ण – "वेदानां सामवेदोऽस्मि") हैं, वे अपने उसी सामरस से समस्त वेदों का अभिसिंचन करते हैं.

।। इस प्रकार रुद्राष्टाध्यायी स्वस्तिप्रार्थनानाममन्त्राध्याय भावार्थ पूर्ण हुआ ।।